Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

# अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र


**अर्हत उवाच**

सव्वत्थ विणीयमच्छरे।

**किसी के प्रति मात्सर्यभाव मत रखो।**

❀ ❀ ❀

इणमेव खणं वियाणिया।

**उपलब्धि का क्षण यही है।**

• नई दिल्ली • वर्ष 23 • अंक 26 • 4 - 10 अप्रैल, 2022 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 02-04-2022 • पेज : 16 • ₹ 10

## तीन देश – बीस राज्य – 18000 किलोमीटर पद यात्रा = अहिंसा यात्रा

# अहिंसा यात्रा के सूत्रों को अपनाने से संपूर्ण विश्व सुखी रह सकता है : आचार्यश्री महाश्रमण

## अहिंसा यात्रा संपन्नता समारोह का भव्य आयोजन

**तालकटोरा स्टेडियम, दिल्ली, २७ मार्च, २०२२**

६ नवंबर, २०१४ को भारत की राजधानी दिल्ली के लालकिले से प्रारंभ हुई अहिंसा यात्रा नेपाल, भूटान एवं भारत के लगभग २० राज्यों का स्पर्श करते हुए आज दिल्ली में समापन की ओर अग्रसर है।

अहिंसा यात्रा संपन्नता समारोह का आगाज अहिंसा यात्रा प्रणेता, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने नमस्कार महामंत्र के मंगल उच्चारण से किया।

आचार्यश्री महाश्रमण जी एक ऐसे आचार्य हैं, जिन्होंने लगभग ५१००० किमी से भी ज्यादा पाद-विहार कर जन-जन से संपर्क किया है। किसी जैनाचार्य द्वारा एक दिन में ४७ किमी का प्रलंब विहार करना इतिहास की विरल घटना है, तो साध्वीप्रमुखाजी के स्वास्थ्य की प्रतिकूलताओं का आकलन करते हुए उन्हें दर्शन दिराने हेतु कितने लंबे-लंबे विहार कर पधारना भी नारी समाज का एक विशेष सम्मान है।

महामनीषी-महातपस्वी ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि सब प्राणी जीना चाहते हैं, कोई मरना नहीं चाहता। किसी भी प्राणी की हत्या नहीं होनी चाहिए। अहिंसा ऐसा धर्म है जो चेतना विशुद्ध बनाने वाला है। अहिंसा ऐसा तत्त्व है, जो आदमी को शांति से जीने में सघन सहायता प्रदान करता है।

अहिंसा धर्म है। हम लोग साधु हैं, हमारे लिए तो अहिंसा जीवन का अंग बना हुआ है, हर क्षण में अहिंसा का संरक्षण हो, ऐसा प्रयास हो।

हम लोगों ने अहिंसा यात्रा ६ नवंबर, २०१४ को दिल्ली से शुरू की थी। ७ वर्षों से कुछ अधिक समय बाद यात्रा पुनः दिल्ली में आ गई है। आज अहिंसा पद यात्रा का संपन्नता का समारोह भी आयोजित हो रहा है। अहिंसा यात्रा के मुख्य तीन सूत्र–सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति को प्रसारित किया। तीनों सूत्रों को समझाकर सभी को संकल्प स्वीकार करवाए।

हम भारत और भारत से बाहर भी गए और वहाँ के लोगों को इन सूत्रों से अवगत करवाया। इन सूत्रों को अपनाने से समाज, राष्ट्र व विश्व सुखी रह सकता है। भारत में लोकतांत्रिक प्रणाली है। हर राष्ट्र में भौतिक विकास के साथ आर्थिक विकास का होना आवश्यक है। इन दोनों विकास के साथ नैतिकता की चेतना का विकास भी जरूरी है। साथ में आध्यात्मिक विकास भी हो।

भारत एक संपदा संपन्न देश है, यहाँ अनेक संत, ग्रंथ और पंथ संपदा है। संत संपदा के साथ कितनी भाषाओं में नए-पुराने ग्रंथ हैं। अनेक पंथ हैं। संतों से सन्मति मिलती रहे। ग्रंथों से ज्ञान व पंथों से पथ दर्शन मिलता रहे। तो भारत का और अच्छा विकास हो सकता है।

परम पावन ने आगे फरमाया कि हमारे धर्मसंघ के प्रथम गुरु आचार्य भिक्षु हुए हैं। उन्होंने भी एक अभिनिष्क्रमण के रूप में यात्रा शुरू की थी। वह उनकी विशेष क्रांति के अभियान के रूप में यात्रा थी। हमारे उत्तरवर्ती आचार्यों ने भी अपने ढंग से यात्राएँ की हैं। परमपूज्य आचार्य तुलसी ने प्रलंब यात्राएँ की थी। कोलकाता व दक्षिण की यात्रा की थी।

परमपूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी ने भी विभिन्न प्रांतों की अहिंसा यात्रा की थी। आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का मानो दिशा निर्देश व इंगित था कि यात्रा करनी है। कहाँ-कहाँ जाना है, नाम भी फरमाए थे। ४-१-२००६ को लगभग सुजानगढ़ में फरमाया था। प्रांतों और विदेशों की यात्रा हो गई।

(शेष पृष्ठ ३ पर)

## तेरापंथ मेरापंथ है –नरेंद्र मोदी

भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अहिंसा यात्रा की संपन्नता पर मंगलभावना अभिव्यक्त करते हुए कहा कि हमारा देश हजारों वर्षों से संतों-ऋषि-मुनियों, आचार्यों की महान परंपरा की धरती रहा है। ये परंपरा वैसी ही चलती रही है। हमारे यहाँ आचार्य वही बना है, जिसने चरैवेती-चरैवेति का मंत्र दिया है। चरैवेती के मंत्र को जीया है। श्वेतांबर तेरापंथ तो चरैवेती-चरैवेती की गतिशील महान परंपरा को नई ऊँचाई देता आया है।

आचार्य भिक्षु ने शिथिलता के त्याग को ही आध्यात्मिक संकल्प बनाया था। आधुनिक समय में आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञजी से जो प्रारंभ हुई महान परंपरा आज आचार्य महाश्रमण जी के रूप में हम सबके सामने जीवंत है। वसुधैव कुटुम्बकम् के सूत्र को विस्तार दिया है। इस पद यात्रा ने देश के २० राज्यों को एक विचार, एक प्रेरणा से जोड़ा है। वही अखंडता है, श्रेष्ठता है।

आपने श्रेष्ठ भारत के संकल्प को प्रसारित करने का काम किया है। मैं अहिंसा यात्रा समापन पर आचार्यश्री एवं उनके अनुयायियों को अनेक-अनेक बधाई देता हूँ। तेरापंथ श्वेतांबर के आचार्यों का मुझे हमेशा से ही विशेष स्नेह मिलता रहा है। इन सबका मैं कृपा पात्र रहा हूँ। मुझे तेरापंथ के आयोजनों से जुड़ने का सौभाग्य मिलता रहा है। इसलिए मैंने आचार्यों के बीच कहा था–ये तेरापंथ, मेरापंथ है।

आपकी यात्रा से एक सुखद संयोग मिला है कि आपकी यात्रा २०१४ में दिल्ली के लालकिले से शुरू हुई थी। उस वर्ष देश ने भी एक नई यात्रा शुरू की थी। मैंने लालकिले से कहा था कि ये नए भारत की नई यात्रा है। अपनी यात्रा में भी वही संकल्प रहे–जन सेवा, जनकल्याण।

आपने देश के कोने-कोने में, जन-जन में नए भारत की इस नई ऊर्जा को अनुभव किया होगा। आपसे देश को प्रेरणा मिलेगी। अहिंसा यात्रा के दौरान लाखों लाख लोग नशामुक्ति संकल्प से जुड़े हैं, जो बहुत बड़ा अभियान है। आध्यात्मिक दृष्टि से भी इसका महत्त्व है। स्वयं का साक्षात्कार होने से स्वयं में स्वयं के दर्शन होते हैं। तभी परमार्थ के कर्तव्यों का बोध होता है।

आजादी के अमृत अवसर पर देश सबसे ऊपर उठकर समाज और राष्ट्र के लिए कर्तव्यों का आह्वान कर रहा है। सबके सहयोग से आगे बढ़ रहा है। सत्ता ही सब कुछ नहीं कर सकती है। राजसत्ता, समाजसत्ता के साथ अध्यात्म सत्ता भी आवश्यक है। मुझे आचार्य तुलसी के वो संकल्प याद आ रहे हैं कि पहले मैं मनुष्य हूँ बाद में तेरापंथ का आचार्य हूँ। सबके साथ से हमारा देश आगे बढ़ रहा है। संत-आचार्य देश को दिशा निर्देश दे रहे हैं। आप संतों का आशीर्वाद देश के संकल्पों को आगे बढ़ाएँगे।

## अहिंसा यात्रा सफल है....सफल है....

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
4 - 10 अप्रैल, 2022



✦ इस दुनिया में कोई स्थायी नहीं, सब राही हैं।
—आचार्यश्री महाश्रमण

# ज्ञान से ज्यादा आचरण का महत्त्व होता है : आचार्यश्री महाश्रमण

**ओसवाल भवन, २५ मार्च, २०२२**

जैन जगत के उज्ज्वल नक्षत्र आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि ज्ञान जीवन में एक प्रकार की ज्योति है। ज्ञान का विकास करना चाहिए। दुनिया में अनेक विद्याएँ हैं, पर अध्यात्म विद्या का भी अपना महत्त्व है। धर्म, कर्म, अहिंसा, संयम आदि की जानकारी आम आदमी व विद्यार्थियों को मिले।

अध्यात्म का आदमी को ज्ञान होता है तो आत्मा के कल्याण की दृष्टि से आदमी कुछ प्रयास कर सकता है। ज्ञान होने के बाद भी आदमी आचरण न करे तो कमी तो है, पर ज्ञान हो गया तो आधा काम तो हो गया। ज्ञान के बाद आचार भी आदमी का अच्छा होना चाहिए। आचरण गलत है तो भी बड़ी कमी है, यह एक प्रसंग से समझाया कि ज्ञान से ज्यादा आचरण का महत्त्व होता है।

आचरण अच्छा नहीं है, तो समाज में प्रतिष्ठा कम होगी। हमारे जीवन में अणुव्रत, नैतिकता आदि अच्छे संस्कार हों, तो हमारा व्यवहार अच्छा रह सकेगा। राजनीति का क्षेत्र हो या धर्मनीति का क्षेत्र यह सच्चाई, ईमानदारी, सद्संस्कार हर जगह काम की चीज है। अच्छा विकास हो सकता है। समाज और धर्म के क्षेत्र में ऊँचा स्थान प्राप्त हो सकता है।

हम लोग अहिंसा यात्रा अब तक कर रहे हैं, इसमें सद्भावना, नैतिकता, नशामुक्ति की बात बताई जा रही है। ये अच्छे संस्कारों के निर्माण का प्रयास है। आदमी हिंदु है या मुसलमान बाद की बात है, पहले आदमी अच्छा इंसान बने। हमारी अहिंसा यात्रा में आदमी को अच्छा बनाने वाली बात है।

अब दिल्ली में थोड़ा भ्रमण करके हरियाणा-राजस्थान जाना है। आज पूर्वी दिल्ली में आना हुआ है। गोयल साहब यहाँ बैठे हैं, जो विधानसभा के अध्यक्ष हैं। आपसे अनेक बार संपर्क हो गया है। पूर्वी दिल्ली में भी जैन-अजैन कोई भी हो सब गुड़मैन रहें। आदमी अच्छा आदमी बने, यह आदमी का चिंतन रहे तो अच्छी बात हो सकती है।

पूज्यप्रवर के स्वागत में बाबूलाल दुगड़ (अध्यक्ष ओसवाल समाज), स्थानीय सभा अध्यक्ष राजेंद्र सिंघी, महिला मंडल (स्वागत गीत), तेजकरण बैद, सुरेश भंसाली, धर्मचंद सेठिया, तेयुप (गीत), हनुमानमल बांठिया (ट्रस्टी ओसवाल भवन), ओसवाल यूथ मंच, किरण चोपड़ा, दिल्ली विधानसभाध्यक्ष रामनिवास गोयल, शाहदरा महिला मंडल अध्यक्ष ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाएँ, सतीश जैन, मुस्कान ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम में तपोमूर्ति मुनि कमलकुमार जी ने आज पूज्यप्रवर से ४४वें वर्षीतप के पच्चक्खाण लिए। पूज्यप्रवर ने फरमाया कि हमारे धर्मसंघ के उग्रविहारी-तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी स्वामी खूब सुखे समाधे रहें। मंगलपाठ की कृपा करवाई एवं प्रत्याख्यान करवाए।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

# प्रतिकूलता में भी सहनशीलता के भाव रखने चाहिए : आचार्यश्री महाश्रमण

**अणुव्रत भवन, २३ मार्च, २०२२**

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमणजी अणुव्रत भवन दो दिवसीय प्रवास हेतु पधारे। महातपस्वी ने प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि शास्त्रों में अनेक प्रकार के पथदर्शन प्राप्त होते हैं। दसवेंआलियं आगम हमारा एक ग्रंथ है, जो साधु-साध्वियों के लिए बड़ा उपयोगी है। उस आगम को कंठस्थ भी करते हैं। साधु को कैसे जीवन जीना चाहिए, गोचरी कैसे करनी चाहिए, दसवेंआलियं में निर्देश दिया गया है।

साधु को कैसे बोलना चाहिए, इसके सातवें अध्याय में निर्देश दिया गया है। भिक्षु कैसा होता है, उसका इसके दसवें अध्याय में बताया गया है कि साधु के लक्षण क्या होने चाहिए? विनय-व्यवहार के संबंध में इसका नौवाँ अध्ययन पढ़ा जा सकता है। अनेक बातें इस आगम में हैं। संसार में सुखी कैसे रहा जा सकता है, यह भी इसके श्लोक में बताया गया है।

सुखी जीवन के निर्देश इसमें दिए गए हैं। पहली बात है—अपने आपको तपाओ, सुकुमारता को छोड़ो। कठिनाइयों को झेलने का प्रयास करो। सुकुमारता है, कठोरता नहीं है, तो जीवन ज्यादा सुखी नहीं रह सकता है। कुछ पाना है तो सुविधा की वृत्ति को त्यागना चाहिए। प्रतिकूलता में भी अनुकूलता-सहनशीलता रखें। कोई शरीर का नाश कर सकता है, पर आत्मा तो अमर रहती है।

जीवन में बड़ा काम करना है, विशेष कुछ पाना है, तो आने वाली कठिनाइयों को सहन करने का प्रयास करना चाहिए। कामनाओं का भी परिसीमन करो या दमन करो तो दुःख भी कम हो जाएगा। लालसा-इच्छा होती है, तो साथ में दुःख भी आ सकता है। किसी से द्वेष-ईर्ष्या मत करो। अनवांछनीय रूप में किसी से राग भी मत करो। मोह मत रखो। इस प्रकार तुम संसार में सुखी रह सकते हो।

जीवनशैली कैसी होनी चाहिए? इस संदर्भ में इस श्लोक में पथ-दर्शन प्राप्त किया जा सकता है। आचार्य भिक्षु ने कितनी कठिनाइयों का सामना किया था। गुरुदेव तुलसी को तो हमने देखा है। इसी अणुव्रत भवन में १९७४ में मुझे साधु प्रतिक्रमण सीखने का आदेश उनसे मिला था और मुनि दीक्षा का भी आदेश यहीं प्राप्त हुआ था।

अणुव्रत भवन एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। पूरी दिल्ली का मुख्य केंद्र है। अणुव्रत की गतिविधि के लिए उपयोगी स्थान है। पर्याय परिवर्तन भी हुआ है। यहाँ खूब अणुव्रत की अच्छी गतिविधियाँ चलती रहें। अणुव्रत समस्याओं के समाधान का एक श्रेयस्कर उपक्रम है। आध्यात्मिक खुराक आम जनता को अणुव्रत से प्राप्त हो सकती है। गुरुदेव तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ जी ने अणुव्रत के माध्यम से नैतिकता का संदेश दिया है। अणुव्रत का कार्य अच्छे ढंग से यहाँ से चलता रहे, यह कामना है।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि आचार्यप्रवर की कथनी-करनी लक्ष्मण रेखा जैसी बन जाती है। आचार्यप्रवर के मन में करुणा है, वे दूसरों का दुःख नहीं देख सकते। स्वयं कष्ट उठाकर भी दूसरों का कल्याण करते हैं। जिसके मन में करुणा है, उसे कोई परास्त नहीं कर सकता।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में के०सी० जैन, महिला मंडल ने गीत द्वारा अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

# अणुव्रत की बात भी दीपक जलाने के समान है : आचार्यश्री महाश्रमण

**लाजपत नगर, दिल्ली, २२ मार्च, २०२२**

अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना देते हुए फरमाया कि हमारी दुनिया में हिंसा भी चलती है और अहिंसा भी चलती है। ऐसा तो कौन सा समय दुनिया में आया होगा या आएगा, जब किसी भी रूप में हिंसा न हो। हो सकता है, यौगलिक काल में, बहुलांश में या पूर्णांश में अहिंसा का साम्राज्य रहता हो। परंतु ये कलिकाल है, पंचम आरे में तो पूर्णतया अहिंसा रहती हो, यह कहना कठिन है।

हिंसा होती है, तो कभी-कभी युद्ध की स्थिति भी बन जाती है। फिर भी संत लोग अहिंसा के लिए कुछ प्रयास भी करने वाले करते हैं। प्रश्न होता है, इतने संत हैं, धर्म-ग्रंथ हैं, इतने प्रवचन होते हैं फिर भी दुनिया में हिंसा है। अनैतिकता और पाप है। फिर यह पुरुषार्थ करने का क्या मतलब?

इस चिंतन के संदर्भ में दो बातें हो सकती हैं—एक तो यह बात है कि प्रवचन-उपदेश होते हैं, वो भीतर में कितना जाता है, ऊपर तक कितना रहता है। यह एक प्रसंग से समझाया कि लोग प्रवचन इधर से सुनते हैं और उधर से निकाल देते हैं, फिर प्रवचन का असर कैसे होगा? प्रवचन सुनना अच्छा है, पर कौन कितनी गहराई से सुनता है, वो अलग बात है।

दूसरी बात इस संदर्भ में यह है कि ये संत लोग या काम करने वाले काम करते हैं तो दुनिया कुछ तो ठीक-ठाक चल रही है ना। ये नहीं होते तो पता नहीं दुनिया कहाँ चली जाती। दुनिया में अनैतिक कार्य है, पर उसे देखकर धर्म का प्रचार ही बंद कर देंगे, तो स्थिति बहुत ही ज्यादा जटिल हो सकेगी। अंधकार होता है, प्रकाश का प्रयास करते रहो। अंधकार को भगाने के लिए दीपक की जरूरत होती हैं न कि हताश होना।

अणुव्रत की बात भी दीपक जलाने के समान है। प्रेक्षाध्यान, जीवन-विज्ञान भी यही प्रेरणा देता है। समाज, राष्ट्र और दुनिया अच्छी रहे। शास्त्रकार ने कहा है कि सब प्राणियों के साथ मेरी मैत्री है। किसी के साथ बैर नहीं है। हिंसा के अंधकार को मिटाने के लिए मैत्री के दीपक जलाना जरूरी है। वो दीपक जलते हैं, तो पवित्र प्रेम के संस्कार उभरते हैं। शांति रहती है। हिंसा अशांति का मार्ग है और अहिंसा शांति का मार्ग है।

सबके साथ मंगल मैत्री का भाव रखने का प्रयास होना चाहिए। एक प्रसंग से समझाया कि हाथ की मुद्रा से दाता और याचक का पता चल जाता है। दीन-हीन आदमी को भी मित्र कहकर पुकारना बहुत बड़ी बात है। अर्थ का दाता दानी होता है, पर सम्मान का दान देने वाला बड़ा दाता होता है।

अपने आसपास रहने वाले के साथ मैत्री का भाव हो। हमारे व्यवहार से दूसरे को तकलीफ न हो। हर प्राणी के साथ हमारा मैत्री-अहिंसा का भाव हो। धर्मग्रंथ पढ़कर लोग पंडित बन सकते हैं, पर धर्मग्रंथ की बात हमारे जीवन में कितनी उतरी यह खास बात है।

इतने धर्मग्रंथ इसलिए रचे गए कि शांति-उपशम रहे। जिसका मन शांत रहता है, वो एक तरह से सर्व शास्त्रों का वेत्ता होता है। अहिंसा को परम धरम कहा गया है। आदमी खुद थोड़ा कष्ट भोग ले, पर दूसरों को तकलीफ देने वाला न बने। शांति का यह मतलब नहीं कि दूसरे को गलती भी न बताएँ। गलत बात को टोकना भी चाहिए।

लोकतांत्रिक प्रणाली अहिंसा की दृष्टि से ज्यादा महत्त्वपूर्ण लगती है। पर लोकतंत्र में भी अनुशासन और व्यवस्था चाहिए। जहाँ नैतिकता-अंकुश हो, ऐसा राम राज्य चाहिए। कोई कहने, मानने या सुनने वाला नहीं, वो राम राज्य नहीं होना चाहिए। हमारे जीवन में अहिंसा, मैत्री, अनुकंपा ये पुष्ट रहे, ये काम्य है।

पूज्यप्रवर के स्वागत में कल्पना सेठिया, सुखराज सेठिया, सेठिया परिवार द्वारा स्वागत गीत, एम ब्लॉक के चेयरमैन सरदार के०बी० सिंह, पुखराज सेठिया, अभिलाषा बांठिया, स्थानीय सभा मंत्री माया दुगड़ ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

पूज्यप्रवर का आज का प्रवास दक्षिण दिल्ली लाजपतनगर में सुखराज सेठिया के निवास पर हुआ। कल पूज्यप्रवर अणुव्रत भवन पधारेंगे।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

# कहानी अहिंसा यात्रा की : विशिष्ट व्यक्तियों के उद्‌गार

अहिंसा यात्रा संपन्नता समारोह में अहिंसा यात्रा प्रवक्ता मुनि कुमार श्रमण जी ने दिल्ली के लालकिले से प्रारंभ हुई अहिंसा यात्रा के विभिन्न संस्मरणों को साझा करते हुए वर्चुअल रूप से अहिंसा यात्रा की कहानी का चित्रांकन किया गया। जिसे विभिन्न चैनलों एवं लाइव प्रसारण के माध्यम से देश-विदेश से लाखों लोगों ने देखा। इसमें अहिंसा यात्रा के शुभारंभ से समापन तक का दृश्य प्रस्तुत किया गया।

**दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल** ने अहिंसा यात्रा समापन समारोह पर कहा कि आचार्यश्री महाश्रमण जी एक ऐसे संत हैं, जिन्होंने अहिंसा यात्रा के माध्यम से जन-जन को सद्‌भावना, नैतिकता और नशामुक्ति का संदेश दिया है। आपने नेपाल भूकंप एवं कोरोना काल में दृढ़ मनोबल का परिचय दिया है। मैं आचार्यश्री के स्वस्थ एवं दीर्घ आयुष्य की मंगलकामना करता हूँ।

अहिंसा यात्रा के हरियाणा प्रवास के दृश्यों को दर्शाया गया। दूसरी बार हरियाणा प्रवेश हुआ तब तो पूज्यप्रवर ने एक दिन में लगभग ४७ किमी की यात्रा की थी। **हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहरलाल खट्टर** ने अपने भाव संदेश के माध्यम से उद्‌गाटित किए। ये अहिंसा यात्रा लोगों को सद्‌भावना, नैतिकता के प्रति जागृत करने मे सफल हुई है। मेरी आचार्यश्री महाश्रमण जी के प्रति मंगलकामना।

उत्तर प्रदेश के क्षेत्र में अहिंसा यात्रा के दृश्यों को बताया गया। २०१५ का मर्यादा महोत्सव कानपुर में आयोजित हुआ था। गुरुदेव सभी धर्मों के तीर्थ स्थलों में पधारे थे। यहाँ के **मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ** ने भी अपनी मंगलभावना प्रेषित की। आचार्यश्री महाश्रमणजी हमारी प्राचीन धार्मिक परंपरा के एक संवाहक हैं।

बिहार के क्षेत्र को तो बार-बार अहिंसा यात्रा ने स्पर्श किया। नेपाल प्रवेश पर तो जन सैलाब इतना उमड़ा था कि कहा नहीं जा सकता। भूकंप आने पर भी आचार्यश्री ने दृढ़ मनोबल का परिचय दिया और पूर्व नियोजित नेपाल के शहर विराटनगर में २०१५ का चतुर्मास सकुशल संपन्न किया था। उस समय नेपाल के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री सहित अनेक राजनेताओं से पूज्यप्रवर का संपर्क हुआ था। आचार्यश्री द्वारा नेपाल में चतुर्मास करना जैन धर्म के आचार्यों की विरल घटना है। उनसे पहले किसी जैनाचार्य ने विदेशों में चतुर्मास नहीं किया था। उस समय के नेपाल के **राष्ट्रपति रामकरण यादव** ने अपना मंगल संदेश भिजवाया है।

बिहार प्रवास में तो वहाँ के स्थानीय लोगों ने पूज्यप्रवर का नाम बदलकर बाबा के पास जाना है, यही उच्चारण करने लगे। गुरुदेव बिहार में बाबा के नाम से प्रसिद्ध हो गए। उस प्रवास के समय बिहार सरकार ने शराबबंदी लागू की थी। कई नेताओं एवं धर्मगुरुओं से पूज्यप्रवर का संपर्क हुआ। अहिंसा यात्रा के प्रवेश पर बूचड़खाने भी बंद किए गए। बिहार के **मुख्यमंत्री नितीश कुमार** ने भी अपना मंगल संदेश प्रेषित किया है। इस यात्रा से स्वस्थ जीवनशैली, स्वस्थ समाज और राष्ट्र का निर्माण हो सकेगा। लोग अहिंसा यात्रा से प्रभावित हुए हैं। उस समय अणुव्रत पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

भूटान के इतिहास की प्रथम घटना है कि किसी जैनाचार्य का भूटान में पदार्पण हुआ है। वहाँ के महंतों ने मंत्रों से पूज्यप्रवर का स्वागत किया था। वहाँ के नरेश का भी पूज्यप्रवर से संपर्क हुआ। यह प्रथम घटना भूटान की थी कि बौद्ध धर्म के सिवाय अन्य धर्मावलंबी जैनाचार्य का जुलूस सहित प्रवेश हुआ था। हजारों लोगों ने पूज्यप्रवर से अहिंसा यात्रा के संकल्प स्वीकार किए थे।

पूज्यप्रवर की अहिंसा यात्रा उत्तर बंगाल, आसाम होते हुए नागालैंड पहुँची। जैन-जैनेत्तर लोगों के लिए ये यात्रा लाभकारी रही। श्वेतांबर आचार्य का नागालैंड पधारना भी नागालैंड की प्रथम घटना थी। नेपाल के राज्यपाल एवं मुख्यमंत्री अहिंसा यात्रा के संभागी बने। कालीम्पोंग भी आचार्यश्री पधारे। आसाम-नागालैंड के **राज्यपाल जगदीश मुखी** ने भी अपना मंगल संदेश प्रेषित किया है।

आचार्यश्री महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति, दिल्ली के अध्यक्ष महेंद्र कुमार नाहटा ने आगंतुक सभी राजनेताओं का भावभरा स्वागत किया एवं उनके पधारने पर आभार व्यक्त किया।

आसाम में भी वहाँ के स्थानीय लोगों ने स्वागत किया। बांगलादेश सीमा तक पूज्यप्रवर पधारे। सभी धर्मावलंबियों ने पूज्यप्रवर का अभिवादन किया। २०१६ का चातुर्मास गौहाटी में किया और अनेक राजनेताओं से पूज्यप्रवर का संपर्क हुआ। आसाम से अहिंसा यात्रा मेघालय पहुँची। आसाम के **मुख्यमंत्री हेमंत विश्वशर्मा** ने अपना मंगल संदेश भिजवाया है। पूज्यप्रवर शिलांग पधारे और क्रिस्चियन समाज ने पूज्यप्रवर का पुरजोर स्वागत किया।

बांगलादेश बोर्डर चंगड़ाबांधा में बंगाली सेना को भी पूज्यप्रवर ने प्रतिबोध प्रदान करवाया। आसाम से पूज्यप्रवर पं० बंगाल पधारे और २०१७ का चतुर्मास कोलकाता में किया। पूज्यप्रवर कोलकाता पधारे तो लोगों का हुजूम उमड़ पड़ा। पं० बंगाल की **मुख्यमंत्री ममता बनर्जी** ने पूज्यप्रवर का भावभरा स्वागत किया।

वहाँ से पूज्यप्रवर झारखंड में पावन तीर्थ स्थल सम्मेदशिखर पधारे। सम्मेद शिखर २० तीर्थंकरों की निर्वाण भूमि है। नक्सली क्षेत्रों में भी पधारे। यहाँ पर भी कई राजनेता संपर्क में आए। कोयले की खादानों के पास भी पूज्यप्रवर पधारे। झारखंड के **राज्यपाल रमेश बैंस** ने अपना मंगल संदेश प्रेषित किया।

पं० बंगाल से पूज्यप्रवर उड़िसा पधारे। उदयगिरि-खंडगिरी पधारे। कटक में मर्यादा महोत्सव-२०१८ हुआ। वहाँ से पश्चिम उड़ीसा की यात्रा हुई। घर-घर लोगों ने अहिंसा यात्रा का स्वागत किया। उड़ीसा के मुख्यमंत्री आदि कई राजनेता व पुरी के महंत से पूज्यप्रवर का संपर्क हुआ। धर्मेंद्र प्रधान ने अपनी मंगलभावना प्रेषित की। उड़ीसा के गवर्नर ने भी अपनी मंगलभावना प्रेषित की।

दक्षिण यात्रा का प्रवेश द्वार था आंध्र प्रदेश। भयंकर गर्मी पर प्रकृति भी महापुरुषों की सेवा करती है। दक्षिण यात्रा का समापन क्षेत्र भी आंध्र प्रदेश बना। आचार्यश्री के त्याग-तप ने अनेक लोगों को प्रभावित किया। उस समय के **मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू** ने अपनी मंगलभावना प्रेषित की।

आंध्र प्रदेश से यात्रा तमिलनाडू पहुँची। वहाँ के लागों ने हिंदी में पूज्यप्रवर का प्रवचन भी सुना। तमिलनाडू के प्राय सभी क्षेत्र पूज्यप्रवर के चरण स्पर्श से धन्य हुए। मद्रास में चतुर्मास के पश्चात कोयंबटूर में मर्यादा महोत्सव व ईरोड में अक्षय तृतीया के समारोह आयोजित हुए। जगह-जगह सर्वधर्म सम्मेलन आयोजित हुए। अनेक राजनेता संपर्क में आए। उस समय के **मुख्यमंत्री पलनी स्वामी** ने अपनी मंगलभावना प्रेषित की।

पूज्यप्रवर केरल के क्षेत्रों को परसते हुए पांडीचेरी, कन्याकुमारी पधारे। पुदुचेरी के कई राजनेता संपर्क में आए। केरल में कई धर्मों के लोग संपर्क में आए। माँ आनंदमयी के आश्रम में पधारे। त्रिवेंद्र के पदमनाभ मंदिर में भी पधारे। कई जगह फादर और नन्स से संपर्क हुआ। कन्याकुमारी में तीन समुद्र के संयम स्थल एवं विवेकानंद केंद्र में पधारे। केरल के **राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान** ने अपनी मंगलभावना प्रेषित की।

कन्याकुमारी में संतजनों का एक अद्‌भुत दृश्य दिखाया—परम पावन का मुख्य मुनिप्रवर सहित साधुवृंदों के द्वारा पाद-प्रक्षालन।

पूज्यप्रवर कर्नाटक राज्य में पधारे। अनेक राजनेताओं से वार्तालाप हुआ। श्रीश्री रविशंकर आदि अनेक संत-महात्माओं से मिलन हुआ। विविध धर्म सम्मेलन आयोजित हुए। बैंगलोर में पूज्यप्रवर का २०१९ का चतुर्मास हुआ। कर्नाटक से अहिंसा यात्रा महाराष्ट्र पधारे। पर कोरोना ने शोलापुर में अहिंसा यात्रा के चरण थाम दिए और शोलापुर में ७२ दिन का प्रवास पूज्यप्रवर का हो गया।

कोरोना कुछ धीमा पड़ा और संकल्प के महाबली परम पावन ने हैदराबाद के लिए प्रस्थान किया और २०२० का चतुर्मास हैदराबाद में किया। वहाँ से पूज्यप्रवर **आरएसएसस सरसंघ संचालक मोहन भागवत** के निवेदन पर संघ मुख्यालय नागपुर पधारे। वहाँ अनेक स्थलों का अवलोकन किया। कई राजनेता संपर्क में आए।

वहाँ से पूज्यप्रवर छत्तीसगढ़ के नक्सली क्षेत्रों का स्पर्श करते हुए रायपुर पधारे। रायपुर से इंदौर का स्पर्श करते हुए पूज्यप्रवर २०२१ का चतुर्मास करने हेतु भीलवाड़ा पधारे। छत्तीसगढ़ व मध्य प्रदेश के अनेक राजनेताओं से संपर्क हुआ। छत्तीसगढ़ के **मुख्यमंत्री भूपेन बघेल** ने भी अपनी मंगलभावना प्रेषित की है। उन्होंने कहा कि महाश्रमण जी पूरे विश्व के शांतिदूत हैं।

मध्य प्रदेश के ६३ दिन के प्रवास में अनेक लोगों से संपर्क हुआ। कई अन्य संप्रदाय के साधु-साध्वियों से संपर्क हुआ। पूज्यप्रवर, चंबल, ताप्ति, नर्मदा आदि नदियों के किनारे भी पहुँचे। अनेक राजनेताओं से वार्तालाप हुआ।

राजस्थान के कई क्षेत्रों का पूज्यप्रवर ने स्पर्श किया। मेवाड़, ढंढाणा और थली प्रदेश में पूज्यप्रवर का प्रवास हुआ। यहाँ भी अनेक गणमान्य व राजनेताओं के साथ संगोष्ठियाँ हुई। आरएसएस के सरसंचालक तो लगभग हर वर्ष पूज्यप्रवर के दर्शन करने पधारते रहते हैं। अनेक धर्मावलंबियों ने पूज्यप्रवर से प्रेरणा पाथेय प्राप्त किया। राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने भी अपनी मंगलभावना प्रेषित की है। आपने कहा कि राजस्थान मानवता का केंद्र बने।

पूज्यप्रवर ने इन दो कोमल चरणों से उत्तर से दक्षिण, पूर्व से पश्चिम तक प्रायः सभी क्षेत्रों को हर मौसम में स्पर्श करने का प्रयास किया है। पूज्यप्रवर के चरणों का मुनिवृंद की ओर से मुख्य मुनिप्रवर ने पाद-प्रक्षालन किया। मुनि ऋषभ कुमार जी ने सहयोग प्रदान किया। मुनि दिनेश कुमार जी ने संस्कृत में मंगलभावों का उच्चारण किया।

सरसंघ संचालक मोहन भागवत का भी मंगल संदेश का प्रसारण हुआ। भागवतजी तो प्रायः प्रतिवर्ष पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ आते रहते हैं। आचार्यश्री ने अहिंसा यात्रा के माध्यम से सुदूर भारत देश व विदेश की यात्रा की है। लोगों को समझाने के लिए आपने सघन प्रयास किया है। हर वर्ग के लोगों ने अहिंसा यात्रा के संदेश को सुना है। हम सब आचार्यश्री का अनुकरण करें। आप तो हमारे लिए ईश्वर की देन हैं।

**पूर्व मंत्री सत्यनारायण जटिया** ने कहा कि अहिंसा यात्रा का गौरवपूर्ण समापन का अवसर है। महाश्रमणजी की अद्‌भुत यात्रा की मैं अनुमोदना करता हूँ। हमारे जीवन में संकल्पों का महत्त्व है। अहिंसा यात्रा तो महासंकल्प है। जैन धर्म तो अहिंसा का मार्ग है। संयम का मार्ग है। हमें इसी तरह की प्रेरणा देता है। आपने एक नए क्षितिज का निर्माण किया है।

## अहिंसा ऐसा तत्त्व है, जो आदमी को शांति...

**(प्रथम पृष्ठ का शेष)**

इस यात्रा में कितने लोग साथ रहे हैं, कितनों का श्रम लगा है, योगदान-सेवा की है, मैं उन सभी की आध्यात्मिक मंगलकामना व उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ। वे आगे भी सेवा देते रहें। पूज्य मंत्री मुनिश्री एवं साध्वीप्रमुखाजी का अहिंसा यात्रा के प्रारंभ में तो सान्निध्य मिला था, पर आज समापन समारोह में दोनों ही विभूतियाँ विद्यमान नहीं हैं। दोनों काल धर्म को प्राप्त हो गई। साध्वीप्रमुखाजी तो दिल्ली से दिल्ली तक लगभग साथ रही थीं।

इस यात्रा में मुख्य मुनि, मुख्य नियोजिकाजी, साध्वीवर्या आदि-आदि साधु-साध्वियाँ व समणियाँ साथ रहे हैं। कितने-कितने लोग भी साथ रहे हैं। आज के इस समापन समारोह में कितने विशिष्ट व्यक्तियों की साक्षात उपस्थिति रही है। यह भी एक गरिमा की बात है। नेपाल के पूर्व उप-राष्ट्रपतिजी का प्रारंभ और समापन में आ जाना विशिष्ट बात है। हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदीजी का भी भाषण हुआ, मोहन भागवत एवं कितने-कितने प्रांतों के जिम्मेदार व्यक्तियों का भी भाषण हुआ है।

अहिंसा यात्रा एक औपचारिक रूप में समापन की घोषणा हो जाए पर साधु का जीवन संयम यात्रा तो अहिंसा यात्रा ही रहनी चाहिए। अहिंसा का प्रचार-प्रसार भी हम लोग करते रहें। हमारा जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ अपने सदस्यों को तो सेवा देता रहे, दूसरों को भी यथासंभव अपनी सेवा देते रहें। हमारा संघ, हम आगे बढ़ते रहें। पूज्यप्रवर ने अहिंसा यात्रा की औपचारिक संपन्नता की घोषणा की।

इस अवसर पर साध्वीवर्याश्री सम्बुद्धयशा जी ने कहा कि आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने युवाचार्यश्री महाश्रमण जी के लिए कहा था कि महाश्रमण महातपस्वी है, महातपस्वी वह होता है जिसका श्रम प्रबल है, श्रमशील है, महाश्रमण में सहनशीलता है।

मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी ने कहा कि अहिंसा यात्रा के प्रणेता ने पाँव-पाँव चलकर गाँव-गाँव, नगर-नगर, शहर-शहर पहुँचकर शांति का संदेश दिया। इतिहास का पुनरावर्तन किया। पूर्व भारत की यात्रा के साथ दक्षिण यात्रा को क्रियान्वित कर दुर्लभ इतिहास का सृजन किया है।

मुनिवृंद द्वारा महाश्रमण गाथा का गीत द्वारा प्रस्तुति हुई।

मुख्य मुनिश्री महावीर कुमार जी ने कहा कि आचार्यश्री महाश्रमण जी भारतीय ऋषि परंपरा के महान संवाहक हैं। आचार्यप्रवर ने सद्‌भावना, नैतिकता और नशामुक्ति का संदेश दिया है।

दिल्ली तेरापंथ समाज के द्वारा गीत की प्रस्तुति हुई। अहिंसा यात्रा के अतीत को दर्शाया गया।

कार्यक्रम में महासभा के अध्यक्ष एवं अहिंसा यात्रा संयोजक मनसुखलाल सेठिया, महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष महेंद्र नाहटा, अमृतवाणी संयोजक सुखराज सेठिया ने अपनी भावनाएँ व्यक्त की।

मुनिवृंद, साध्वीवृंद एवं समणीवृंद द्वारा अहिंसा यात्रा प्रणेता के प्रति गीत द्वारा अपनी मंगलभावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन अहिंसा यात्रा प्रवक्ता मुनि कुमारश्रमणजी ने किया। पूज्यप्रवर के मंगलपाठ से कार्यक्रम का समापन हुआ।

✦ *जहाँ अहिंसा होती है, संयम होता है, वहाँ पर्यावरण की सुरक्षा स्वतः हो सकती है। बिजली, पानी का अपव्यय नहीं करना चाहिए।*
**—आचार्यश्री महाश्रमण**

# महिला मंडल के विविध आयोजन

## अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन

**राजसमंद।**

तेममं, राजसमंद ने भिक्षु बोधि स्थल में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन किया, जिसका प्रारंभ नमस्कार मंत्र से हुआ। मुनि धैर्य जी ने कहा कि तेरापंथ महिला मंडल की बहनें कमजोर नहीं हैं। इन्होंने क्षेत्र में पुरुषों से आगे अपना स्थान बना लिया है। मुनि सिद्धप्रज्ञ जी ने कहा कि महिला खुद पहल करें, तभी समाज में बदलाव आएगा, आत्मनिर्भर और स्वावलंबी महिला ही समाज को आगे पहुँचा सकती है।

महिला मंडल अध्यक्ष डॉ० सीमा कावड़िया ने सभी का स्वागत किया। और कहा कि हमें अपनी शक्ति को उजागर करने का मौका मिला है हम इतने सक्षम हो जाएँ कि हमें महिला दिवस मनाना ही नहीं पड़े। बोधि स्थल अध्यक्ष ख्याली लाल चपलोत ने महिलाओं को महिला दिवस की बधाई दी। मुख्य वक्ता राजसमंद महिला मंच संयोजिका शकुंतला पामेचा ने कहा कि जब तक हम सजग नही होंगे तब तक आगे नहीं बढ़ पाएँगे।

महिला मंडल द्वारा दो बहनों का सम्मान किया गया। जो माता और पिता दोनों की भूमिका निभाते हुए अपने बच्चों और परिवार को साथ लेकर चले और समाज में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई। जिसमें मंजु दक और जागृति कावड़िया का सम्मान किया गया। साध्वीप्रमुखा सरदारांजी पर लता मादरेचा के निर्देशन में परिसंवाद किया गया। जिसमें हेमलता कोठारी, डोली बड़ोला, मीनल कावड़िया, चंचल कोठारी, मोनिका मादरेचा ने भाग लिया। महिला मंडल द्वारा एक्शन सॉन्ग सीमा चपलोत, प्रीति बड़ोला, जीनल डूंगरवाल और मोनिका गुंदेचा द्वारा किया गया।

इस अवसर पर मीडिया प्रभारी लाड मेहता ने अपने विचार व्यक्त किए। मंच संचालन डिंपल कर्णावत ने किया और आभार मिनल कावड़िया द्वारा किया गया। इस अवसर पर महावीर इंटरनेशनल अध्यक्ष भरत दक, टीपीएफ अध्यक्ष विनोद बोहरा, राजकुमार दक, विनय कोठारी, अनिल बड़ोला, पूजा दक, संपत कावड़िया, अभिषेक दक आदि ११० से अधिक लोगों की उपस्थिति रही।

## अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन

**अररिया कोर्ट।**

तेममं, अररिया कोर्ट द्वारा जैन श्वेतांबर तेरापंथ भवन में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर प्रेरणा सम्मान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार मंत्र के संगान से हुई। महिला मंडल की बहनों ने समर्पिता गान से मंगलाचरण की प्रस्तुति दी। मंत्री माला छाजेड़ ने आगंतुक बहनों का स्वागत करते हुए नारी के विविध रूपों को रूपायित कर नारी शक्तिकरण को परिभाषित किया।

रितु डागा, कविता बोथरा, नीतू छाजेड़ एवं रितु चंडालिया ने अपने वक्तव्य के माध्यम से नारी को महिमामंडित किया। सिंगल पेरेंट रहते हुए अपने आत्मविश्वास, कठिन परिश्रम एवं विपरीत परिस्थितियों का सामना कर अपने बच्चों को उज्ज्वल भविष्य प्रदान करने के लिए बबीता अग्रवाल को प्रेरणा सम्मान से सम्मानित किया गया। बबीता अग्रवाल ने अपने अनुभवों को साझा किया। अध्यक्ष ज्योति बोथरा ने आज की नारी को परिषाषित किया।

अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में आयोजित भाषण प्रतियोगिता एवं क्विज प्रतियोगिता में सहभागी बहनों को पुरस्कृत किया गया। संरक्षिका सुशीला दुधेड़िया ने बहनों को बधाई दी। शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के स्वास्थ्य लाभ हेतु आरोग्य बोहिलाभं का सामुहिक जप किया गया। संघगान के द्वारा कार्यक्रम संपन्न किया गया। कार्यक्रम का संचालन मंत्री माला छाजेड़ ने किया।

## रूपांतरण शिल्पशाला कार्यक्रम का आयोजन

**विजयनगर, बैंगलोर।**

तेरापंथ सभा भवन में यह कार्यशाला का आयोजन किया गया। नमस्कार महामंत्र द्वारा कार्यशाला प्रारंभ की गई। महिला मंडल की वरिष्ठ उपाध्यक्ष महिमा पटावरी ने आरोग्य बोहिलाभं का सामुहिक जप करवाया। मंडल की बहनों ने प्रेक्षा गीत के द्वारा मंगलाचरण किया। महिला मंडल की अध्यक्षा प्रेम भंसाली ने सभी का स्वागत करते हुए शुभ्रता ६ लेश्या के बारे में अपने विचार व्यक्त किए।

कर्नाटक प्रभारी मधु कटारिया द्वारा विषय प्रस्तुति दी गई। प्रशिक्षक अरविंद मांडोत का परिचय प्रचार-प्रसार मंत्री किरण बोराणा ने दिया। सीपीएस के राष्ट्रीय प्रशिक्षक अरविंद ने अपने प्रशिक्षण में अपने विचार रखते हुए लेश्या के बारे में रंगों के बारे में महत्त्वपूर्ण प्रशिक्षण दिया।

कार्यशाला में अभातेममं की पूर्व महामंत्री व प्रेक्षाध्यान प्रशिक्षिका वीणा बैद ने विषय पर जानकारी देते हुए ध्यान के मर्म को चैतन्य केंद्रों के माध्यम से समझाया और रंगों के साथ ध्यान करवाया।

संचालन निवर्तमान अध्यक्ष, कार्यक्रम की संयोजिका कुसुम डांगी द्वारा किया गया। आभार ज्ञापन मंडल की कार्यकर्ता मोनिका गांधी ने किया। कार्यशाला में सहमंत्री अंजु सेठिया एवं सुनीता भटेवरा सहित कार्यसमिति से सरिता जैन का अतुलनीय सहयोग रहा। कार्यक्रम में सभी की सक्रिय उपस्थिति रही।

## जैन स्कॉलर के चतुर्थ बैच का शुभारंभ

**लाडनूं।**

अभातेममं के तत्त्वावधान में आचार्य तुलसी शिक्षा परियोजना के अंतर्गत जैन स्कॉलर के चतुर्थ बैच का शुभारंभ लाडनूं के जैन विश्व भारती परिसर में स्थित अभातेममं मुख्य कार्यालय रोहिणी में हुआ।

साध्वी विमलप्रज्ञाजी, साध्वी श्रुतयशाजी एवं साध्वी सम्यक्त्वयशाजी की सन्निधि एवं महामंत्रोच्चार सहित बैच का प्रारंभ हुआ। साध्वी विमलप्रज्ञा जी ने महिला मंडल द्वारा जैनिज्म के प्रचार-प्रसार में इस प्रकार के पाठ्यक्रम को महनीय बताते हुए जैन धर्म के व्यापक सिद्धांतों को समझते हुए आत्मसात करने की प्रेरणा दी।

अभातेममं अध्यक्ष नीलम सेठिया ने उपस्थित विद्यार्थियों को संपोषण देते हुए आज की परिस्थिति में जैन धर्म के सिद्धांतों की प्रासंगिकता बताते हुए श्रावक-श्राविकाओं को ऐसे पाठ्यक्रम से जुड़कर स्वयं जैनिज्म को समझते हुए औरों को भी प्रेरित करने का आह्वान किया।

जैन स्कॉलर निर्देशिका मंजु नाहटा एवं सह निर्देशिका कनक बरमेचा ने इस कोर्स की उपयोगिता पर प्रकाश डाला। मुख्य अतिथि चुरू जिला प्रमुख वंदना आर्य ने जैन धर्म के मूल सिद्धांतों की महत्ता को दर्शाते हुए महिला मंडल द्वारा ऐसे कोर्स हेतु साधुवाद प्रेषित किया। ज्ञातव्य है कि इस बैच में जैन धर्म के सिद्धांतों का गहन अध्ययन हेतु देशभर से सुदूर प्रदेशों से ३० विद्यार्थी एकत्रित हुए हैं।

## 'सफल संकल्प से सफलता तक' कार्यशाला का आयोजन

**गंगाशहर।**

साध्वी कीर्तिलता जी के सान्निध्य में अभातेममं द्वारा निर्देशित 'सफर संकल्प से सफलता तक' कार्यशाला का आयोजन महिला मंडल द्वारा दो चरणों में किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीश्री द्वारा नवकार मंत्र व लोगस्स के पाठ से हुई। गंगाशहर महिला मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण किया गया। महिला मंडल की अध्यक्ष ममता रांका ने स्वागत भाषण द्वारा कार्यशाला में पधारे हुए सभी अतिथियों का स्वागत किया। गंगाशहर, बीकानेर एवं गंगाशहर प्रांतीय शाखाओं द्वारा राष्ट्रीय अध्यक्षा व उनकी टीम का स्वागत किया।

साध्वी कीर्तिलता जी ने कहा कि संकल्प की डोर से सफलता तक पहुँचें, समर्पण सफलता का घोतक है। साध्वीश्री जी ने कहा कि साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी गुरुदृष्टि की आराधना करते हुए गुरुमई बन गई।

अभातेममं की राष्ट्रीय अध्यक्षा नीलम सेठिया ने कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कहा कि प्रगति का दरिया बहता रहे, परिश्रम अनवरत चलता रहे, शासनमाता प्रमुखाश्री की रिक्तता इस पावन धरा से कुछ अंश तक पूरा कर पाएँ, और शासनमाता को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि छोटे-छोटे संकल्पों के द्वारा हम उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि दे पाएँगे। उपाध्यक्ष विजयलक्ष्मी भूरा ने कहा कि Be your own light नारी शक्ति स्वयं ताकत बनें, अपने इरादों को मजबूत रखे। पूर्व महामंत्री सुमन नाहटा द्वारा टॉक शो के द्वारा तलाक के बढ़ने के कारणों को बताया। अभातेममं की कार्यकारिणी सदस्य नीतू पटावरी ने अपने भाव व्यक्त किए।

कार्यक्रम के दूसरे सत्र में कैसे बनें संस्था के सजग प्रहरी खुला मंच कार्यक्रम किया गया, जिसमें सभी मंडल की बहनों द्वारा सवाल पूछे गए और सभी का समाधान राष्ट्रीय अध्यक्षा नीलम सेठिया द्वारा किया गया। गंगाशहर महिला मंडल की परामर्शिका शारदा डागा ने अनुगूंज पुस्तक का लोकार्पण राष्ट्रीय टीम द्वारा करवाया। इस पुस्तक में सहयोगी रही बहनें—सोहनी देवी, संगीता श्यामसुखा, सरोज देवी, सुधा श्यामसुखा, सूरज देवी, सुनीता, ममता रांका, मंजु देवी, जयश्री बोथरा परिवार का मोमेंटो और पताका द्वारा सम्मान किया गया।

कार्यक्रम में गंगाशहर सभा उपाध्यक्ष प्रकाश भंसाली, शांति प्रतिष्ठान के अध्यक्ष महावीर रांका, मंत्री हंसराज डागा, तेयुप से देवेंद्र डागा, अणुव्रत समिति से मनीष बाफना ने अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित कीं। इस कार्यक्रम में राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्या व मारवाड़ अंचल की प्रभारी सारिका बागरेचा व विनीता बैंगाणी की उपस्थिति रही।

साधुमार्गी संघ की बहनों की भी इस कार्यशाला में सहभागिता रही। कार्यशाला में गंगाशहर की बहनों, कन्या मंडल एवं सौंपी डागा का सहयोग रहा। कार्यशाला के प्रायोजक कमल सुधा बोथरा व संस्था के रजिस्ट्रेशन करने में सहयोगी अजय सेठिया का भी सम्मान किया गया। नीलम सेठिया द्वारा गंगाशहर महिला मंडल को एप्रिसिएट सर्टिफिकेट एवं सभी शाखा मंडल को प्रशस्ति-पत्र देकर सम्मानित किया गया। कार्यशाला के कार्यक्रम का संचालन सुप्रिया राखेचा व संजु लालाणी द्वारा किया गया। आभार ज्ञापन मंत्री कविता चोपड़ा द्वारा किया गया।

## अभातेयुप योगक्षेम योजना

योगक्षेम

| | |
|---|---|
| ✳ अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र - 2019-2021 | 51,00,000 |
| ✳ श्री अशोक श्रेयांस बरमेचा, तारानगर-हैदराबाद | 11,00,000 |
| ✳ श्री बच्छावत परिवार, सरदारशहर-जयपुर | 5,00,000 |
| ✳ श्री बसंत अर्पित नाहर, महेंद्रगढ़-उधना | 5,00,000 |
| ✳ श्री राकेश कठोतिया, लाडनूं-मुंबई | 5,00,000 |
| ✳ श्री रूपचंद कोडामल जैनसुख दुगड़, बीदासर-मुंबई | 5,00,000 |
| ✳ श्री शंकरलाल विमल विनीत पितलिया, भीलवाड़ा | 5,00,000 |
| ✳ श्री शांतिलाल पारसमल दक उमरी, उधना-सूरत | 5,00,000 |
| ✳ श्री सुमतिचंद गोठी, सरदारशहर-मुंबई | 5,00,000 |
| ✳ श्री विपिन जैन पारख, सिरसा-मुंबई | 5,00,000 |
| ✳ श्री राजकुमार गौतम प्रसाद जैन, बेलपाड़ा-उड़ीसा | 5,00,000 |
| ✳ श्री सागरमल दीपक विमल कमलेश श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा | 5,00,000 |
| ✳ श्री जैनसुख दीपक बोथरा, छापर-सिलीगुड़ी | 5,00,000 |

✦ *जब क्षयोपशम की स्थिति बनती है, तब संयम की भावना बनती है और वह उस दिशा में पादन्यास करता है।*
**– आचार्यश्री महाश्रमण**

✦ *अपराध और नशा–ये दोनों व्यवसाय से जुड़े हुए हैं। नशा, अपराध तब वर्जित हो सकता है, जब हमारी चेतना जागरूक बने। जैसे-जैसे चेतना ऊपर की ओर जाएगी, अपराध समाप्त होंगे और नशे की आदत भी समाप्त होगी।*

**–आचार्यश्री महाश्रमण**



अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
4 - 10 अप्रैल, 2022

# साध्वीप्रमुखाश्री जी की स्मृति सभा के आयोजन

## साध्वीप्रमुखा का जीवन अनेक विशेषताओं का समवाय था

**भुवनेश्वर।**

शासनमाता, साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के संथारापूर्वक महाप्रयाण के पश्चात पुण्य स्मृति सभा का आयोजन तेरापंथ भवन में मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा द्वारा किया गया। इस अवसर पर नगर की विभिन्न संस्थाओं द्वारा भावांजलि अर्पित की गई। मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि जैन धर्म का महत्त्वपूर्ण संगठन है–तेरापंथ। तेरापंथ में प्रथम गुरु आचार्य भिक्षु हुए हैं और चतुर्थ आचार्य जीतमल जी हुए हैं। उन्होंने साध्वीप्रमुखा पद का विधिवत सृजन किया। प्रथम साध्वीप्रमुखा सरदारांजी सती हुई आठवीं प्रमुखाकनकप्रभा हुई। साध्वीप्रमुखा का जीवन अनेक विशेषताओं का समवाय था।

मुनिश्री ने आगे कहा कि उनकी आचार निष्ठा, आगम निष्ठा, मर्यादा निष्ठा, सिद्धांत निष्ठा, अतुलनीय थी। वही व्यक्ति विकास कर सकता है, जिसमें सहनशीलता, विनय निष्ठा, श्रमनिष्ठा, स्वाध्याय आदि गुण होते हैं, साध्वीप्रमुखा में ये सब गुण विद्यमान थे। उन्होंने नारी उत्थान के अनेक कार्य किए। इस अवसर पर बाल मुनि कुणाल कुमार जी ने सुमधुर स्मृति गीत प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष बच्छराज बेताला, मंत्री पारस सुराणा, भवन समिति के अध्यक्ष सुभाष भूरा, राज्य अल्पसंख्यक आयोग के सदस्य प्रकाश बिताला, तेयुप अध्यक्ष विवेक बेताला, तेमम की अध्यक्षा मधु गिड़िया, वन बंधु परिषद के अध्यक्ष अजय अग्रवाल, महेश्वरी समाज की तरफ से लालचंद मोहता, स्थानकवासी साधुमार्गी संघ की ओर से नवरतन बोथरा, वरिष्ठ श्राविका विमला भंडारी, उपासिका प्रेमलता सेठिया ने अपने विचार व्यक्त करते हुए भावांजलि अर्पित की।

ज्ञानशाला परिवार से नयनतारा सुखाणी, जितेंद्र बैद ने भावांजलि अर्पित की। श्रद्धानिष्ठ संगायक कमल सेठिया, तेमम, धारिणी सुराणा, मुक्ता बरड़िया, वृद्धि बरड़िया ने गीतों के संगान से भावांजलि अर्पित की। कार्यक्रम के अंत में चार लोगस्स का सामुहिक ध्यान किया गया। संचालन मुनि परमानंद जी ने किया।

## अतुलनीय व्यक्तित्व था साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी का

**शिवाकाशी।**

शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री जी की स्मृति सभा का आयोजन साध्वी उज्ज्वलप्रभाजी की सन्निधि में हुआ। कार्यक्रम का प्रारंभ सामुहिक जप अनुष्ठान से हुआ। साध्वी उज्ज्वलप्रभाजी ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ में साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी की महनीय, अतुलनीय भूमिका रही। नारी जगत को आचार्यों की कृपा दृष्टि से साध्वीप्रमुखाश्री जी ने जो चमक दी, जो धार दी, युगों-युगों तक उनकी अनुगूंज रहेगी।

साध्वी सन्मतिप्रभाजी ने अपने जीवनगत प्रेरक संस्मरणों के द्वारा साध्वीप्रमुखाश्री जी के असाधारण व्यक्तित्व को उजागर किया। साध्वी प्रबोधयशा जी ने गीत के माध्यम से साध्वीप्रमुखाश्रीजी के करुणामयी स्वरूप को अभिव्यक्त किया।

कार्यक्रम का संचालन साध्वी अनुप्रेक्षाश्री जी ने किया। शिवाकाशी के वरिष्ठ श्रावक नवरत्नमल डागा, संपत बाई डागा, महिला मंडल अध्यक्षा सुशीला सेठिया, मंत्री कुसुम बैद, दिव्या आंचलिया ने अपने श्रद्धासुमन गीत, कविता एवं संस्मरणों के माध्यम से अभिव्यक्त किए। महिला मंडल ने सामुहिक गीत प्रस्तुत किया।

# राष्ट्रभावना एवं नैतिक मूल्यों के विकास हेतु अणुव्रत के मार्ग पर प्रयास करें

**चलथान।**

अणुव्रत विश्वभारती सोसायटी के निर्देशन में अणुव्रत समिति, चलथान द्वारा 'चलें अणुव्रत की ओर' विषय पर विशेष कार्यक्रम तेरापंथ भवन में किया गया। जिसमें पलसाणा तालुका के ४३ गाँवों के सरपंचों का सम्मान किया गया।

मुख्य अतिथि राजेश सुराणा ने कहा कि अणुव्रत नैतिकता का अभियान है। राष्ट्र भावना को सुदृढ़ बनाकर चारित्रिक मूल्यों के विकास का यह अद्वितीय आंदोलन है। अरविंद भाई शाह ने कहा कि अणुव्रत आचार्य तुलसी द्वारा प्रस्तुत शांत क्रांति का अभियान है। अणुव्रत सेवी बालुभाई पटेल ने कहा कि अणुव्रत जीवन परिवर्तन का पैगाम है। अणुव्रत में ऐसे व्रत हैं जो व्यक्ति के व्यक्तित्व में अमूलचूल परिवर्तन ला सकते हैं। अणुव्रत सेवी अर्जुन मेड़तवाल ने कहा कि वर्तमान युग हिंसा का युग है विश्व पटल पर आज हिंसा का तांडव चल रहा है। ऐसे समय में बचने का एक ही मार्ग है–अणुव्रत।

कार्यक्रम के अध्यक्ष एसडी जैन इंटरनेशनल स्कूल के संचालक कैलाश भाई जैन ने कहा कि अणुव्रत आचार्य तुलसी का श्रेष्ठ अवदान है। अणुव्रत के कार्यों हेतु मैं समर्पित भाव से सदैव अपना सहयोग देने के लिए तत्पर रहूँगा। तेरापंथी सभा, चलथान के संरक्षक तेजमल नौलखा, अध्यक्ष सोहनलाल दक, अणुव्रत समिति अध्यक्ष लीना चोरड़िया, पूर्व अध्यक्ष बाबूलाल नौलखा आदि ने अपने विचार रखे।

अणुव्रत समिति सूरत के मंत्री सुनील श्रीश्रीमाल, विशिष्ट अतिथि अशोक भाई शाह, चलथान के सरपंच महेंद्र भाई देसाई, तेयुप के अध्यक्ष ज्ञानचंद दुगड़ आदि ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए। मंगलाचरण महिला मंडल की बहनों द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन अणुव्रत समिति के मंत्री रीना पीतलिया ने किया।

## रंगों का प्रभाव जीवन पर पड़ता है

**नोखा।**

मानव के जीवन में लेश्या का अर्थात् रंगों का प्रभाव पड़ता है। होली का त्योहार सामने है। ये बाह्य रंग है, किंतु आध्यात्मिक रंग छः लेश्या होती है। कृष्ण, नील, पद्म, कापोत, शुक्ल, तेजो लेस्या, रंग अपना-अपना प्रभाव अच्छा व बुरा देती है। व्यक्ति रंगों की साधना करे। व्यक्ति कैसा है शांत या गुस्सा वाला वह भी नापा जाता है–यह उद्गार डॉ० मुनि अमृत कुमार जी ने तेरापंथ महिला मंडल द्वारा विषय 'रंगों का महत्त्व पर प्रकाश डाला।

तेरापंथ महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण गीतिका का संगान किया। सुमन भूरा, अध्यक्ष मंजु बैद, मंत्री प्रीति मरोठी ने लेश्या व रंगों के बारे में बताते हुए विचार रखे।

तेरापंथ महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण गीतिका का संगान किया गया। सुमन भूरा, अध्यक्ष मंजु बैद, मंत्री प्रीति मरोठी ने लेश्या व रंगों के बारे में बताते हुए विचार रखे।

मुनि उपसम कुमार जी ने बुराई छोड़कर, गलत संगत, दुराचार छोड़ जीवन में अच्छाई, व्रत अपनाने पर बल दिया। तेरापंथ सभा मंत्री इंद्रचंद बैद ने बारह व्रत कार्यशाला के बारे में जानकारी दी।

# यादें... शासनमाता की - (३)

● **साध्वी स्वस्तिक प्रभा** ●

८ मार्च, २०२२, श्री बालाजी एक्शन अस्पताल में २१ दिन प्रवास कर साध्वीप्रमुखाजी भिन्न सामाचारी से लगभग ६:५ बजे अध्यात्म साधना केंद्र पधारी। आ०प्र० ने भी आज करीब २० किमी का विहार किया। १२:४० के आसपास सा०प्र० के पास पधारे, जमीन पर बैठकर तीन बार वंदना की। सुखपृच्छा के बाद–

**सा०प्र० :** आचार्यश्री की मर्जी हो तो आहार यहीं पर (साध्वियों के प्रवास स्थल पर) करवा लें।

**आ०प्र० :** लोग वहाँ (आ०प्र० के प्रवास स्थल) पर खड़े होंगे। मैंने उनको मंगलपाठ नहीं सुनाया, पहले सीधे यहीं पर आ गया, फिर आप जैसे फरमाएँ।

**सा०प्र० :** मंगलपाठ मुख्यमुनि सुना देंगे।

**आ०प्र० :** ठीक है, वैसे मुनि दिनेश को कहा हुआ है। हम आहार यहीं कर लेंगे, फिर वापस एक बार आपके पास आ जाएँगे।

**सा०प्र० :** कितना लंबा विहार करवाया है? कितनी धूप में पधारे हैं, आचार्यश्री आज तो विश्राम करवाएँ।

**आ०प्र :** आहार के बाद विश्राम कर लेंगे। पहले आपका समय सवा दो बजे का था। आज उसी समय ही, सवा दो बजे, आपके पास आ जाएँगे।

**सा०प्र० :** तहत् कृपा करवाई।

**आ०प्र० :** लगभग २:२५ पर सा०प्र० के पास पधारे।

**सा०प्र० :** आचार्यश्री के विश्राम कम हुआ।

**आ०प्र० :** नहीं-नहीं। आपको नींद आ जाती है क्या?

**सा०प्र० :** कभी आ जाती है, कभी नहीं आती। एम्बुलेंस की आलोयणा दिलाने की कृपा करवाएँ।

**आ०प्र० :** एकमासिक छेद इसके लिए आता है। सा०प्र० की ८ मार्च, २०२२ को किए गए एम्बुलेंस प्रयोग के लिए एकमासिक छेद का प्रायश्चित दिया जा रहा है।

**सा०प्र० :** पूर्ण कृपा करवाई।

**आ०प्र० :** आपके यहाँ आने की समय की व्यवस्था बना देते हैं।

**सा०प्र० :** मैं वहाँ आ जाऊँ।

**आ०प्र० :** नहीं-नहीं। हालाँकि ये बात अच्छी है, इतनी शक्ति होनी चाहिए कि सा०प्र० मेरे ठिकाने में पहले की तरह पधारते रहें। ये पधारने की भावना-कामना अच्छी है। जब तक और यदि वह स्थिति न हो, तब तक हम यहाँ आने का प्रयास रखें। सूर्योदय के तत्काल बाद आएँ या १५:२० मिनिट बाद आएँ?

**सा०प्र० :** बाद में ही ठीक है।

**आ०प्र० :** सूर्योदय के बाद वर्तमान में अंदाज से ७ बजे के आसपास हम यहाँ पहुँच जाएँ। फिर साध्वियाँ-समणियाँ यहीं वंदना कर लें। ७-७:३० तक यहीं रह जाएँ।

**आ०प्र० :** (संतों से) मेरे कमरे से इस कमरे की दूरी कितनी है?

**संत :** १०० मीटर

**आ०प्र० :** शाम को भी एक बार आ जाएँ।

**सा०प्र० :** गुरुदेव! इतनी कृपा नहीं करवाएँ। पहले से ही गुरु के उपकार से उऋण नहीं हुआ जा रहा, और कर्ज बढ़ता जा रहा है।

**आ०प्र० :** आप मेरे वहाँ (आ०प्र० के प्रवास स्थल) पर पधारें, साध्वियों का काम करवाओ।

**सा०प्र० :** काम तो आ०प्र० को सौंप दिया।

**आ०प्र० :** आप ये भावना रखवाएँ कि हम (साथ में) छापर चलें, फिर बायतू चलें, बम्बई चातुर्मास गुरुकुलवास में साथ में हो जाए, बाद में राजस्थान पधार जाएँ, उसके बाद आपको ज्यादा नहीं घुमाएँगे।

**सा०प्र० :** गुरुदेव ऐसी शक्ति दिलाएँ, मैं जल्दी से ठीक होकर आपके चरणों में रहूँ।

**आ०प्र० :** यात्रा करने के संदर्भ में आप ये भावना रखवाएँ।

**सा०प्र० :** मुझे साध्वियों ने बताया कि आ०श्री का इंडो स्टेडियम में कार्यक्रम होगा तब आप पधारें, संघ की प्रभावना होगी।

**आ०प्र० :** आप पधारें और उद्बोधन दिलाने का सोचें।

**सा०प्र० :** (सुमतिप्रभाजी की ओर देखते हुए) कुछ बिंदु इनको नोट करवाए हैं।

**आ०प्र० :** आप पधारें और स्वयं फरमाएँ। यात्रा में भी साथ पधारें और भाषण, उद्बोधन दिलाएँ। साध्वियों की बात भी आप करवाएँ। साध्वियों की पृच्छा में भी पधारें। तीन काम हैं–यात्रा, भाषण, काम में सहभागिता। हम तो यहाँ आ जाते हैं। पर आप हमारे ठिकाने पधारें और विराजें जब हो। ऐसे नहीं कि व्हील चेयर से पधारें, जैसे पहले पधारते थे, वैसे ही पधारें, जब हो।

**सा०प्र० :** थोड़ी कमजोरी ठीक हो जाए।

**आ०प्र० :** बाद में भाषण भी दिलाएँ।

**सा०प्र० :** भाषण की तो खास बात नहीं। बस आपकी सेवा हो जाए।

**आ०प्र० :** अब दोपहर में साढ़े तीन बजे वापस आ जाएँ। फिर यहीं रहें, सायं सा०प्र० के पास फिर एक बार आ जाएँ, त्याग का अंतिम पानी यहीं पीकर फिर अपने स्थान पर चले जाएँ।

**सा०प्र० :** गुरुदेव आप इतनी शक्ति दिलवा रहे हैं, इतनी सुरक्षा (रिछपाल) करवा रहे हैं, तब मैं जल्दी ठीक हो जाऊँ।

गुरुदेव ने ३:३० से ४:१० तक उपासना करवाई, फिर सा०प्र० के निकटतम स्थित अपने कमरे में पधार गए। सायं आहार के बाद लगभग ५:३०–६:१० बजे तक सा०प्र० को सेवा करवाने के पश्चात अपने प्रवास स्थल पर पधार गए। **(क्रमशः)**

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
4 - 10 अप्रैल, 2022



✦ *साधक सर्वप्रथम अपनी साधना का लक्ष्य निर्धारित करे। इसके लिए वह स्वाध्याय और ध्यान में तल्लीन रहे। इससे उसका कर्म-मल धुलता रहेगा।*

**—आचार्यश्री महाश्रमण**

# आत्मा के आसपास

❑ **आचार्य तुलसी** ❑

**प्रेक्षा : अनुप्रेक्षा**

## जैन-योग में कुंडलिनी

**प्रश्न :** कुंडलिनी या तैजस-शक्ति को जाग्रत करने में अनेक खतरों की संभावना। है। यह बात सर्वसम्मत जैसी है। खतरों को मोल लेकर उस शक्ति के विकास की क्या अपेक्षा है?

**उत्तर :** खतरों की संभावना से किसी महत्त्वपूर्ण काम को रोका नहीं जा सकता है। खतरे किस काम में नहीं है? ऊपर, नीचे, तिरछे सर्वत्र खतरे-ही-खतरे हैं। साहसी व्यक्ति उनके बीच में गुजरता है और उन्हें पार कर विशेष उपलब्धि कर लेता है। जो व्यक्ति खतरों के आगे घुटने टेक देता है, वह कभी आगे बढ़ ही नहीं सकता। मार्ग साधना का हो या व्यवसाय का, वैज्ञानिक आविष्कारों का हो या रोटी बनाने का, खतरे कहीं भी हो सकते हैं। तैजस-शक्ति को जगाने की प्रक्रिया भी खतरों से खाली नहीं है। बिना समाधि अवस्था या निर्विकल्प अवस्था भी संभव नहीं है। इसमें ध्यान केंद्रित होने से ही समाधि की स्थिति प्राप्त हो सकती है। अन्यथा विचारों की उखाड़-पछाड़ रूक नहीं सकती। तैजस-शक्ति जग जाती है तो जीवन में लयबद्धता अपने आप आ जाती है। विचार आते ही नहीं। अपेक्षा होने पर समाधि तोड़नी पड़ती है, किंतु समाधि लगाने के लिए कोई प्रयत्न नहीं करना पड़ता।

प्राचीन ग्रंथों में तैजस-शक्ति या कुंडलिनी जागरण के और भी कुछ परिणाम बताए हैं। सामान्यतः हर व्यक्ति के केश और नख बढ़ते हैं। तेजस-शक्ति का विकास होने पर इनकी वृद्धि रुक जाती है। शरीर और मन की बीमारियां समाप्त हो जाती हैं। शरीर के रासायनिक परिवर्तनों के साथ ये परिवर्तन असंभव भी नहीं है। तीर्थंकरों की अतिशयगाथा में ये सब बातें सम्मत हैं। तीर्थंकरों के केश और नख नहीं बढ़ते। यह अतिशयोक्ति। नहीं, वास्तविकता है। वे आधि और व्याधि से भी मुक्त रहते हैं। मानसिक बीमारियां तो। उन्हें होती ही नहीं। शारीरिक भी आगंतुक हो सकती हैं, विकारजनित नहीं। उनके शरीर में इतना तैजस सक्रिय रहता है कि बीमारी के परमाणु भस्मसात हो जाते हैं।

तैजसशक्ति दो प्रकार की होती है-शीत और उष्ण। शीत तैजस का प्रयोग अनुग्रह के लिए किया जाता है और उष्ण तैजस का प्रयोग निग्रह में होता है। वरदान और अभिशाप दोनों रूपों में काम करने वाली यह शक्ति अनेक दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। यही कारण है। कि साधक खतरों की संभावनाओं को स्वीकार करके भी तैजस-शक्ति के विकास और जागरण हेतु प्रयत्नशील रहता है। तैजस-शक्ति के दो रूप हैं-विपुल और संक्षिप्त। जागृत शक्ति को विपुल कहा जाता है और सुप्त को संक्षिप्त। इनके संबंध में पहले बताया ही जा चुका है।

## आभा-मंडल

**तेजोलेश्या छोड़ती, मन पर दिव्य प्रभाव।**
**उजले आभावलय से, सुख का प्रादुर्भाव।।**
**आकर्षण आभा-जनित, ओंति पर मृदुहास।**
**पतझर में भी फूलता, कोई नव मधुमास।।**

**प्रश्न :** तेजोलेश्या, तेजोलब्धि और तैजस-शक्ति, एक ही अर्थ के आस-पास ये तीन शब्द हैं। लब्धि और शक्ति शब्द का उपयोग तो अनेक ग्रंथों में मिलता है। पर लेश्या शब्द शायद जैन दर्शन का ही पारिभाषिक शब्द है। यह लेश्या और तेजोलेश्या अपनी अर्थयात्रा में किन नए तथ्यों को अभिव्यक्ति दे सकते हैं?

**उत्तर :** जैन दर्शन में लेश्या का सिद्धांत बहुत व्यापक और सबको प्रभावित करने वाला है। तेजोलेश्या की जागृति और सक्रियता के बिना साधना में प्रवेश नहीं हो सकता, अध्यात्म का विकास नहीं हो सकता। जब इस लेश्या के स्पंदन जागते हैं तब मन पर दिव्य प्रभाव-सा होता है। उन क्षणों की अनुभूति इतनी सुखद होती है, जिसे शब्दों से अभिव्यक्त नहीं किया जा सकता। इस लेश्या की सक्रियता से आभावलय निर्मल होता है और पदार्थ से न मिलने वाले सुखद संवेदन जाग्रत होते हैं। जिस व्यक्ति की तेजोलेश्या विकसित हो जाती है, उसमें लौकिक संपर्कों से होने वाली दुश्चिंताएं और दुर्भावनाएं समाप्त हो जाती है। उसमें सहज आभा प्रकट होती है और वह आकर्षण का केंद्र बन जाता है। तेजोलेश्या जितनी प्रशस्त होती है, व्यक्ति की भावनाएं उतनी शुद्ध होती जाती हैं। वह चिंताओं से सर्वथा मुक्त हो जाता है और उसकी आकृति पर निरंतर मधुर मुस्कान बिखरी हुई रहती है। उसके संपर्क में आने वाला व्यक्ति भी अपने आप में एक खिंचाव का अनुभव करता है। जिसकी तैजस-शक्ति जागृत हो जाती है, वह बुरे आचरण और व्यवहार के प्रति सहज उदासीन हो जाता है। वह किसी का अहित-चिंतन नहीं करता और न ही अपनी प्रवृत्ति से किसी को दुःख पहुंचाता है।

लेश्या या तेजोलेश्या एक प्रकार की पौद्गलिक शक्ति है, जिसके आधार पर भावधारा का निर्माण होता है। जिस व्यक्ति की लेश्या जैसी होती है, वह वैसा ही व्यवहार करने लगता है। व्यक्तित्व-विकास और अध्यात्म-विकास दोनों ही दृष्टियों से लेश्या का कार्यक्षेत्र व्यापक है। पुद्गलात्मक तेजोलेश्या के वर्ण, गंध, रस, स्पर्श आदि भी विशिष्ट होते हैं, इसलिए वह व्यक्तित्व विकास में सहायक बनती है।

**प्रश्न :** आभा-मंडल और लेश्या एक ही चीज है क्या?

**उत्तर :** सूर्य तेजोमय परमाणुओं का पिण्ड है। उसकी रश्मियां फैलती हैं और पुनः उसी में समाविष्ट हो जाती हैं। तेजस-शक्ति या तेजोलेश्या को इसी रूप में समझा जा सकता है। वह शरीर के भीतर है। प्रयोगकाल में उसकी रश्मियां बाहर निकलती हैं। उन रश्मियों के परमाणुओं का विकिरण होने से आभावलय बनता है। लेश्या दो प्रकार की होती है-भावलेश्या और द्रव्यलेश्या। भावलेश्या का संबंध आत्मा के परिणामों (भावधारा) से है। द्रव्यलेश्या के विकिरण परमाणुओं की संघटना है। यही आभावलय है। इसकी मलिनता और उज्ज्वलता भावलेश्या पर निर्भर है। भावलेश्या विशुद्ध है तो आभावलय उज्ज्वल होगा और भावलेश्या मलिन है तो आभावलय भी धुंधला रहेगा।

आभा-मंडल केवल मनुष्य में ही नहीं होता, वनस्पति में भी होता है। वनस्पति तो सजीव है, अचेतन पदार्थों में भी आभामंडल होता है। उनमें प्राण भले ही न हों, तेजसशक्ति तो होती ही है। चेतन का आभा-मंडल परिवर्तनशील होता है। क्योंकि उनकी भावधारा के साथ-साथ आभावलय भी बदलता रहता है। अचेतन में कोई भावधारा नहीं होती, इसलिए उसका आभावलय स्थायी होता है। जिन पदार्थों के प्रति सहज आकर्षण होता है, उसका कारण उनका आभामंडल ही है। कुछ व्यक्ति शारीरिक दृष्टि से सुंदर। नहीं होते। न तो वे मांसल होते हैं, न गौरवर्ण वाले होते हैं, फिर भी आकर्षण के केंद्र बन जाते हैं। कुछ व्यक्तियों की शरीर-रचना काफी सुघड़ होती है। वे गौर वर्ण और पुष्ट शरीर वाले होते है। फिर भी उनके प्रति किसी के मन में खास आकर्षण नहीं होता। इसका प्रमुख कारण आभा-मंडल ही है। आभा-मंडल जितना उज्ज्वल होगा, व्यक्ति उतना ही आकर्षक, प्रभावशाली, उपादेयवचन और आदरास्पद होगा, यह अनुभूत तथ्य है।

**(क्रमशः)**

# साँसों का इकतारा

❑ **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा** ❑

**(६९)**

तुम महाप्राण बन गए देव!
मैं रही अभी तक अल्पप्राण
तुम अमित शक्ति के स्रोत बने
पर मैं उससे अब तक अनजान।।

तुमने मेरे शिशु-मानस को
सपनों में आकर सहलाया
वह लगा मचलने तब तुमने
दे मधुर प्रलोभन बहलाया
मेरी अबूझ उलझन के तो
बन गए स्वयं तुम समाधान।।

जब भूल राजपथ इधर-उधर
मैं भटक रही थी कानन में
तब घोर अंधेरे में बिजली
चमकाई थी तुमने घन में
फिर बुला रहे संकेतों से
कब भूल सकी वह मधुर-गान।।

**(७०)**

तुम्हें जानने की मन में उत्सुकता छाई।

बने हुए हैं शब्दचित्र कितने ही तुम पर
पर अज्ञात आज तक मुझसे उनकी शैली
डूब गई अनगिन पृष्ठों की श्यामलता में
रहा आज तक भी यह जीवन गूढ़ पहेली
उड़ी कल्पना के पंखों से भी अनंत में
जटिल तुम्हारे जीवन को मैं समझ न पाई।।

तुम-मुझ में अद्वैत मानकर देव! आज तक
बार-बार भ्रम के झूले में झूल रही थी
तुमको पाना सहज इसी चिंतन से प्रेरित
देख तुम्हारी मुस्कानों को भूल रही थी
समझ हुई कुछ प्रौढ़ मुझे महसूस हो गया
कहाँ समुन्नत हिमगिरि और कहाँ पर खाई।।

सपनों की दुनिया में जब-जब मैंने देखा
सदा हाँकते आए तुम मेरा जीवन-रथ
तिमिर-जाल को चीर जलाकर दीप हजारों
दिखलाते आए हो तुम मुझको अपना पथ
आँख खुली मेरी तब तुम अदृश्य हो गए
पकड़ नहीं पाई अब तक तेरी परछाईं।।

**(७१)**

जनपथ पर उतरी छाया में सुरतरु तुम साकार।
कामकुम्भ-सा रूप देखकर प्रणत हुआ संसार।।

क्लान्ति मिटाते रहते हो तुम शतशाखी पादप बन
श्रांति दूर करती रहती है शीतल छाया छन-छन
शांति तुष्टि का अनुभव होता पथिकों को हर बार।।

आतप से तपते लोगों का ताप हरा है तुमने
बिना माप आबाल वृद्ध में मोद भरा है तुमने
मिलता रहे तुम्हारा सबको श्रेयस्कर आधार।।

दीर्घ साधना से बन पाए युग के सफल प्रणेता
श्रद्धानत सौ बार तुम्हें वह आज बधाई देता
पर-उपकार-परायण मानव पा लेता विस्तार।।

**(क्रमशः)**

जय भिक्षु जय तुलसी जय महाप्रज्ञ जय महाश्रमण

**शासनमाता उवाच**

घड़ी हर क्षण सचेत-सावधान रहने की प्रेरणा देती हुई कहती है- ''तुम प्रमाद से बचते रहो''।
यह भगवान महावीर की वाणी ''समयं गोयम!
मा पमायए'' का संकेत है।

## विनम्र श्रद्धांजलि

# भंवरलाल सिंघी

**श्रीडूंगरगढ़ - मुम्बई**

Subhlene®
SUITINGS & SHIRTINGS

जय भिक्षु जय तुलसी जय महाप्रज्ञ जय महाश्रमण

तुम्हारा रूप हो जिसमें मुझे दे दो वही दरपन।
तुम्हारे स्वर जहां गूंजे मुझे दे दो वही मधुवन।।

भावपूर्ण श्रद्धांजलि

**स्व. मूलचंदजी चोरड़िया**
**संथारा साधिका स्व. बिमलादेवी चोरड़िया**

**मदन मोहन, धर्मेंद्र, सुभाष चोरड़िया परिवार**
**सुजानगढ़-चास बोकारो-कोलकता**

## हार्दिक श्रद्धांजलि

ममता बरसे कण - कण में, स्नेह की बहती निर्मल धार ।
मातृ हृदया महासतीवर, करते वंदन शत - शत बार ।।

वत्सलता की प्रतिमुर्ति मातृ हृदया 'शासन माता'
**असाधारण साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभाजी**
के देवलोकगमन पर सज्जल नेत्रों से भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं ।

माणक देवी संचेती
महावीर सिंह संचेती तथा परिवार
चाडवास निवासी, काठमाडौं प्रवासी

Marvel®
Piping Systems
Marvel Technoplast Pvt. Ltd.
Corporate Office: Heritage Plaza – II; Kathmandu; Nepal
Tel: 00977-1-4169122 / 4169123

जय भिक्षु जय तुलसी जय महाप्रज्ञ जय महाश्रमण

तन साधन धर्म का,
इसको रखो अरोग।

करो साधना अनवरत,
जीवन बने अमोघ।।

# स्व. हंसराजजी पटावरी
## (पुत्र स्व. पन्नालालजी पटावरी की पुण्यस्मृति में)

: विनम्र श्रद्धांजलि :

मंजू पटावरी (धर्मपत्नी), मनोज-प्रियदर्शनी पटावरी (पुत्र-पुत्रवधु) मनीष-नेहा पटावरी (पुत्र-पुत्रवधु)
पौत्र: पर्ल, सिद्ध - पौत्री: लीसा एवं समस्त पटावरी परिवार

TPCT
Tarachand Patawari Charitable Trust
Guwahati | Mumbai | Ladnun

हनुमान फार्मास्यूटिकल्स
गुवाहाटी

बिजॉय स्टोर्स एंड ट्रेडिंग कॉरपोरेशन
गुवाहाटी

रिची लैबोरेट्रीज लिमिटेड
मुंबई-गुवाहाटी

✦ *विद्या से विनय मिले, यह तो जरूरी नहीं। विनय से विद्या शोभायमान होती है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

जय भिक्षु जय तुलसी जय महाप्रज्ञ जय महाश्रमण

**शासनमाता उवाच**

लकीर खींचो बड़ी,
जागे शुभ संस्कार।
सत्पथ पर बढ़ते रहो,
होगी कभी न हार।।

## विनम्र श्रद्धांजलि

**लीना दूगड़ प्रेक्षा दूगड़ आंचल दूगड़**
लाडनूं-कोलकाता

जय भिक्षु जय तुलसी जय महाप्रज्ञ जय महाश्रमण

**शासनमाता उवाच**

धर्मी रखता सदा,
सुख-दुःख में समभाव।
आत्माराधक के लिए,
क्या आतप क्या छांव।।

## विनम्र श्रद्धांजलि

**प्रीति घोषल**
लाडनूं-दिल्ली
अध्यक्ष-तेरापंथ महिला मंडल, लाडनूं

जय भिक्षु जय तुलसी जय महाप्रज्ञ जय महाश्रमण

**शासनमाता उवाच**

घटिका कहती सदा,
क्षण-क्षण रहो सचेत।
बचते रहो प्रमाद से,
जिन-वाणी-संकेत।।

## विनम्र श्रद्धांजलि

**सायर बैंगानी**
लाडनूं-दिल्ली
संरक्षिका
अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

जय भिक्षु जय तुलसी जय महाप्रज्ञ जय महाश्रमण

**शासनमाता उवाच**

आदर सबका करो,
दो सबको सम्मान।
पा जाओगे सहज ही,
सबके दिल में स्थान।।

## विनम्र श्रद्धांजलि

**मधु बैंगानी (कोठारी)**
**सुषमा बैंगानी**
लाडनूं-कोलकाता

जय भिक्षु जय तुलसी जय महाप्रज्ञ जय महाश्रमण

**शासनमाता उवाच**

चरित्र-निर्माण ही,
हो मानव का ध्येय।
इससे बढ़कर है नहीं,
इस जीवन में श्रेय।।

## विनम्र श्रद्धांजलि

**शोभा दुगड़**
लाडनूं-कोलकाता
पूर्व अध्यक्ष, तेरापंथ महिला मंडल, लाडनूं

जय भिक्षु जय तुलसी जय महाप्रज्ञ जय महाश्रमण

**शासनमाता उवाच**

अनुशासन है बड़ा,
जीवन का आधार।
दूर भगाता अहं को,
पक्का पहरेदार।।

## विनम्र श्रद्धांजलि

**जतनदेवी जैन (बैंगानी)**
लाडनूं-कोलकाता
संरक्षिका,
तेरापंथ महिला मंडल, कोलकाता-पूर्वांचल

जय भिक्षु जय तुलसी जय महाप्रज्ञ जय महाश्रमण

**ओजस्वी मनुज का,**
**बनता है इतिहास।**

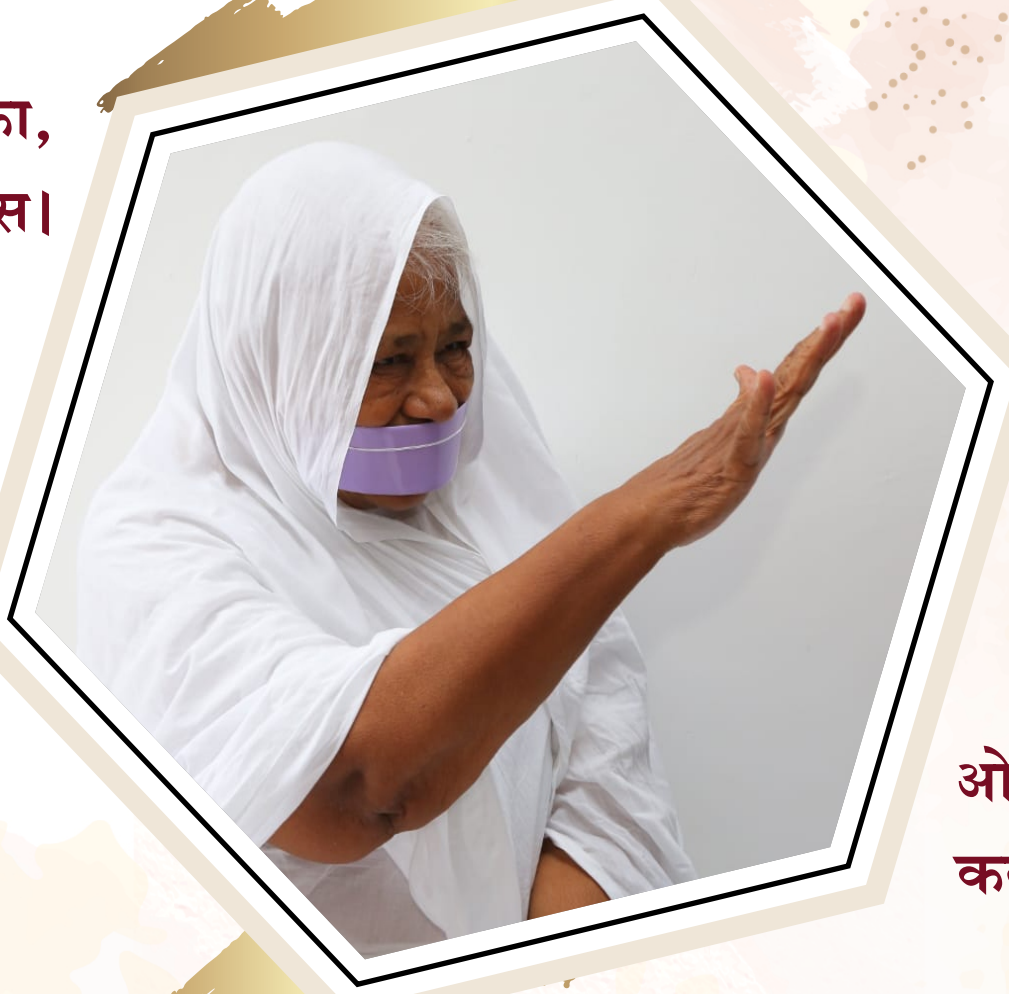

**ओज तेज सम्पन्न बन,**
**करते रहो विकास।।**

## श्रद्धाप्रणति

**स्व. चन्दनमलजी दुगड़ की पुण्य स्मृति में**
**उनकी धर्मपत्नी श्रीमती तारादेवी दुगड़ एवं सुपुत्र मनोजकुमार, राजेशकुमार दुगड़**

# चन्दनतारा दुगड़ फाउण्डेशन

**लाडनूं-हैदराबाद-वापी**

DUGAR®
beyond the obvious
Chandantara Dugar Group

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
4 - 10 अप्रैल, 2022



✦ सेवा शाश्वत धर्म है और यह भेदभाव को खत्म करने वाली है। सेवा स्व का समर्पण है और ज्ञान का फल है।
—आचार्यश्री महाश्रमण

# शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी

जन्म
22 जुलाई 1941

महाप्रयाण
17 मार्च 2022

**शासनमाता उवाच**

अनुशासन है बड़ा, जीवन का आधार।
दूर भगाता अहं को, पक्का पहरेदार।।

भावपूर्ण
श्रद्धांजलि

**श्रद्धाप्रणत सुवालाल, सुरेशचंद्र, पुखराज, रतनलाल, लक्ष्मीलाल, महावीरकुमार, महेंद्रकुमार, अमरचंद, तेजमल, पवनकुमार, अनिलकुमार, मनोजकुमार, यश, कृष, वीर, प्रथम, विदित, अनिरेन, कियान, कृषांन, ईशान दक परिवार**

**(मेवाड़ में चिताम्बा-केंगेरी-बेंगलोर कर्नाटक)**

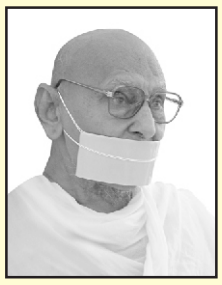

# संबोधि

❑ आचार्य महाप्रज्ञ ❑

## बंध-मोक्षवाद

**भगवान् प्राह**

**(२८) रागो द्वेषश्च तद्धेतुः, वीतरागदशा सुखम्।**
**रत्नत्रयी च तद्धेतुः एष योगः समासतः।।**

*दुःख के हेतु हैं—राग और द्वेष। वीतराग दशा सुख है और उसका हेतु है—रत्नत्रयी—सम्यक्-दर्शन, सम्यक्-ज्ञान और सम्यक्-चारित्र। योग का यह मैंने संक्षिप्त निरूपण किया है।*

भगवान् महावीर ने कहा—जन्म दुःख है, बुढ़ापा दुःख है, रोग दुःख है और मृत्यु दुःख है। यह संसार ही दुःख है, जहाँ प्राणी क्लेशों को प्राप्त होते हैं। जरा, रोग, मृत्यु और अप्रिय वस्तुओं का संयोग दुःख है। व्यक्ति दुःखों के कारणों को जान लेने पर ही दुःख-मुक्ति की ओर अग्रसर होता है। दुःख मुक्ति का उपाय है—संवर (निवृत्ति)। अकर्म के बिना दुःख का निरोध नहीं होता। दुःखोत्पन्न करने वाली मूल प्रवृत्तियाँ हैं—रागात्मक और द्वेषात्मक। इनका न होना सुख है। सुख की प्राप्ति के लिए रत्नत्रयी का आलंबन अपेक्षित है। सम्यग्-दर्शन, सम्यग्-ज्ञान और सम्यग्-चारित्र—यह रत्नत्रयी है। तीनों आत्मा के गुण हैं और आत्मा के निकटतम सहचारी हैं। आत्मा का निश्चय सम्यग्-दर्शन, आत्मा का बोध सम्यग्-ज्ञान और आत्म-स्थिरता सम्यग्-चारित्र है।

महात्मा बुद्ध के चार आर्य-सत्य हैं—दुःख, दुःख-समुदाय, दुःख-निरोध और दुःख-निरोध का उपाय। दुःख-समुदाय में भगवान् बुद्ध ने द्वादश निदान बताए हैं। द्वादश निदान का निरोध दुःख-निरोध है। भगवान् महावीर की दृष्टि में राग और द्वेष का निरोध ही दुःख का अवसान है। दुःख निरोध का उपाय भगवान् बुद्ध की दृष्टि में अष्टांगिक मार्ग है और भगवान महावीर की दृष्टि में रत्नत्रयी है। बुद्ध कहते है।—चार आर्य-सत्यों के ज्ञान से निर्वाण होता है। भगवान् महावीर कहते हैं—रत्नत्रयी के ज्ञान ओर अनुसरण से मुक्ति होती है।

**मेघः प्राह**

**(२९) भद्रं भद्रं तीर्थनाथ!, तीर्थे नीतोऽस्म्यहं त्वया।**
**भावितात्मा स्थितात्मा च, त्वया जातोऽस्मि सम्प्रति।।**

*मेघ बोला—हे तीर्थनाथ! अच्छा हुआ, बहुत अच्छा हुआ। आपके प्रसाद से मैं तीर्थ में आ गया हूँ और आपके अनुग्रह से मैं अब भावितात्मा और स्थितात्मा हो गया हूँ।*

मोह का निरसन मोह से नहीं होता। अज्ञान का अंधकार ज्ञान की ज्योति के सामने क्षीण हो जाता है। खून से सना वस्त्र खून से शुद्ध नहीं होता। ममत्व का आवरण निर्ममत्व से हटता है। बंध से बंध का क्षय नहीं होता। भगवान् महावीर से दुःख, दुःख-मुक्ति का उपाय, बंध, मोक्ष, अहिंसा आदि का विशद विवेचन सुन मेघ की निमीलित आँखें खुल गईं। वह सचेतन हो गया। मोह का आवरण हटने लगा। ज्ञान के प्रकाश के सामने तम नष्ट हो गया। मेघ के लड़खड़ाते पैर पुनः स्थिर हो गए। उसने अपने हृदय की गाँठ भगवान् के सामने खोल दी।

**(३०) नष्टो मोहो गतं क्लैव्यं, शुद्धा बुद्धिः स्थिरं मनः।**
**पुनर्मौनं तवाभ्यर्णे, स्वीचिकीर्षामि साम्प्रतम्।।**

*अब मेरा मोह नष्ट हो गया है, क्लैव्य चला गया है, बुद्धि शुद्ध हो गई है और मन स्थिर बन गया है। अब मैं पुनः आपके पास श्रामण्य स्वीकार करना चाहता हूँ।*

**(क्रमशः)**

# अवबोध

❑ मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' ❑

## धर्म बोध

### दान धर्म

**प्रश्न १२ :** दान कौन सा भाव कौन सी आत्मा?

**उत्तर :** लोकोत्तर दान भाव चार – औदायिक छोड़कर; आत्मा एक – योग
लौकिक दान भाव – औदायिक, पारिणामिक; आत्मा एक – योग

**प्रश्न १३ :** दान छह में कौन, नौ में कौन?

**उत्तर :** लोकोत्तर दान छह में – जीव, नौ में तीन – जीव, संवर, निर्जरा
लौकिक दान छह में – जीव, नौ में दो – जीव, आश्रव।

**(क्रमशः)**

# उपासना

(भाग - एक)

❑ आचार्य महाश्रमण ❑

## आचार्य हरिभद्र

एक बार रात्रि को राजसभा से लौटते समय राजपुरोहित हरिभद्र जैन उपाश्रय के पास से गुजरे। उपाश्रय में साध्वी-संघ की प्रवर्तिनी 'महत्तरा याकिनी' संग्रहणी गाथा का उच्च ध्वनिपूर्वक जाप कर रही थी।

**चक्कि दुगं हरिपणगं, पणगं चक्कीण केसवो चक्की।**
**केसव चक्की केसव, दुचक्की केसव चक्कीय।।**

श्लोक की स्वर-लहरियाँ हरिभद्र के कानों में टकराईं। उन्होंने इसे बार-बार ध्यानपूर्वक सुना। मन ही मन चिंतन चला पर बुद्धि को पूर्णतः झकझोर देने के बाद भी वे अर्थ के नवनीत को न पा सके। हरिभद्र के अहं पर यह पहली बार करारी चोट थी। अर्थबोध पाने की तीव्र जिज्ञासा उनको उपाश्रय तक ले गई। उपाश्रय में प्रवेश करने के बाद दूर खड़े होकर अभिमानी हरिभद्र ने महत्तराजी से पूछा—'इस स्थान पर चकचकाहट किस बात में हो रही है? अर्थहीन पद्य का पुनरावर्तन क्यों किया जा रहा है?' हरिभद्र ने यह प्रश्न अतिवक्र भाषा में प्रस्तुत किया था।

याकिनी महत्तराजी धीर-गंभीर, आगम-विज्ञ और व्यवहार-निपुण साध्वी थी। उन्होंने मृदु शब्दों में कहा—'नूतनं लिप्तं चिगचिगायते' नया लिपा हुआ आँगन चकचकाहट करता है। यह शास्त्रीय पाठ है। इसे गुरु-निर्देश बिना समझा नहीं जा सकता। याकिनी द्वारा दिए गए स्पष्ट और सारगर्भित उत्तर को सुनकर विद्वान् हरिभद्र प्रभावित हुए। वे झुके और बोले—साध्वीजी! कृपा कर मुझे इसका अर्थ समझाइए।

अपनी पूर्व प्रतिज्ञा के अनुसार शिष्य-दीक्षा प्रदान करने की बात भी उन्होंने साध्वी याकिनी के सामने विनम्र शब्दों में प्रस्तुत की।

कथावली प्रसंग के अनुसार श्लोक का अर्थ पूछने पर महत्तराजी उनको अपने गुरु जिनदत्तसूरि के पास ले गई और पूर्व घटना की सारी स्थिति अपने गुरु के सामने रखी। जिनदत्तसूरि ने सविस्तार श्लोक का अर्थबोध दिया। विद्वान् हरिभद्र जिनदत्तसूरि से ज्ञान-दान प्राप्त कर परम तुष्ट हुए। उन्होंने अपनी प्रतिज्ञा की बात भी गुरु के सामने रखी। जिनदत्तसूरि ने विद्वान् हरिभद्र से कहा—'तुम अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार महत्तराजी के धर्म-पुत्र बन जाओ।' राजपुरोहित ने कहा—'धर्म क्या होता है?' जिनदत्तसूरि ने सम्यक् रूप से धर्म का स्वरूप समझाया। हरिभद्र सच्चे जिज्ञासु थे। उन्होंने नम्र होकर पूछा—'धर्म का फल क्या होता है?'

जिनदत्तसूरि भी ज्ञान के अक्षय भंडार थे। उन्होंने कहा—'पंडितवर्य! सकाम वृत्ति वालों के लिए धर्म का फल स्वर्गादि की प्राप्ति है। निष्काम वृत्ति वालों के लिए जैन धर्म का फल भव-विरह (संसार-संतति का विच्छेद) है। हरिभद्र बोले—'मुझे भव-विरह ही प्रिय है।'

महा कारुणिक दया के सागर जिनदत्तसूरि बोले—'भद्र! भव-विरह की उपलब्धि के लिए सर्वपाप-निवारक मुनि-वृत्ति को तुम ग्रहण करो।' आचार्य जिनदत्तसूरि के दर्शन के विद्वान् हरिभद्र के सांसारिक वासना का संस्कार क्षीण हो गया। भव-विरह की बात उनके मानस को वेध गई। वे मुनि-दीक्षा लेने के लिए प्रस्तुत हुए। ब्राह्मण-समाज को बुलाकर उनके सामने उन्होंने जैन मुनि बनने की भावना प्रकट की। अपने संप्रदाय के प्रति दृढ़ आस्थाशील ब्राह्मणों द्वारा राजपुरोहित हरिभद्र के इन विचारों का विरोध होना स्वाभाविक था। वैसा ही हुआ। किसी ने भी उनको समर्थन नहीं दिया। विद्वान् हरिभद्र बोले—

**न वीतरागादपरोऽस्ति देवो, ब्रह्मचर्यादपरं चरित्रम्।**
**नाभीतिदानात् परमस्ति दानं, चारित्रिणो नापरमस्ति पात्रम्।।**

वीतराग से परे कोई देव नहीं है। ब्रह्मचर्य से श्रेष्ठ कोई आचार नहीं है। अभयदान से श्रेष्ठ कोई दान नहीं है। चरित्रगुण-मंडित पुरुष से उन्नत कोई पात्र नहीं है।

विवेक-बुद्धि से अपने समाज को अनुकूल बनाकर तथा उनसे सहमति प्राप्त कर विद्वान् हरिभद्र जैन मुनि बने। वे राजपुरोहित से धर्मपुरोहित बन गए और साध्वी याकिनी महत्तरा को उन्होंने धर्मजननी के रूप में अपने हृदय में स्थान दिया। आज भी उनकी प्रसिद्धि याकिनी-सूनु के नाम से है।

**(क्रमशः)**

✦ *शराब पीने के प्रमुख कारण हैं—विलासिता, सोसायटी, कुसंगति और अज्ञान। बुराइयों की जड़ है मद्यपान।*
**—आचार्यश्री महाश्रमण**

# शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के प्रति आध्यात्मिक उद्गार

## निहारा महाश्रमणी दरबार

● **साध्वी अमितरेखा 'जसोल'** ●

निहारा महाश्रमणी दरबार।
शासनमाताजी से सबको, मिलता स्नेह अपार।।

कोलकाता की महानगरी में, जन्म हुआ तुम्हारा।
मात-पिता के लाड़-प्यार में बचपन बीता सारा।
चंदेरी का संस्कारी है, पूरा बैद परिवार।।

तुलसी प्रभु के श्रीचरणों में संयम पथ अपनाया।
विनय समर्पण देख तुम्हारा, गुरु दिल में हरसाया।
साध्वीप्रमुखा पद का तुमको, मिलता है उपहार।।

तीन-तीन आचार्यों की किरपा तुमने पाई।
महाशक्ति से ऊर्जा पाकर, रही सदा अरुणाई।
गुरु सन्निधि का स्वप्न निराला, देखो हुआ साकार।।

भक्त उदाई को तारन, जैसे महाप्रभुजी आए।
महाश्रमण भी तीव्र गति से, दिल्ली में पधराए।
पवन पुत्र बन तीव्र गति से, दिल्ली में पधराए।
सहनशीलता बड़ी विलक्षण, भरती है संस्कार।।

**लय : यही है जीने का विज्ञान---**

---

## संथारो कर कर्‌यो कमाल

● **साध्वी मधुरेखा** ●

साध्वीप्रमुखा पा हुया निहाल।
संथारो कर कर्‌यो कमाल।।

पाँच दशक रो वर्तारो, दियो कितानै थे सहारो।
थांस्यूं सारा हाँ खुशहाल।।१।।

तन री त्यागी थे ममता, देखी सगला म्हैं समता।
सही वेदना थे विकराल।।२।।

धीर वीर गंभीर अपार, साध्वीगण मोटो परिवार।
वत्सलता री राखी ढाल।।३।।

शासनमाता संबोधन गण वन में बरस्यो सावन।
महाश्रमण जी है गणपाल।।४।।

**लय : छोटी-छोटी गैय्या---**

---

## ज्योतिर्मय जीवन था तेरा

● **साध्वी सुव्रतयशा** ●

ज्योतिर्मय जीवन था तेरा, श्रमणी गण की थी तुम शान।
असाधारण साध्वी प्रमुखा, बनी संघ की तुम पहचान।।

कलकत्ता में जन्म तुम्हारा, चंदेरी में पाई शिक्षा।
भिक्षु भूमि की पुण्य धरा पर, तुलसी कर से पाई दीक्षा।
विनय समर्पण अद्‌भुत तेरा, गुरु दिल में जो बना स्थान।।

तीन-तीन आचार्यों की सेवा तन-मन से तुमने साधी।
करुणा से आप्लावित जीवन, देती सबको पूर्ण समाधि।
अनुपमेय व्यक्तित्व तुम्हारा, कितने शब्दों से गाए यशगान।।

पंचाचार साधना से जीवन को तुमने खूब संवारा।
योग मिला था आर्यप्रवर का गजब किया संथारा।
सही वेदना शांत भाव से लक्ष्य बनाया था महान।।

## नयनों के दिव्य उजारे

● **साध्वी चैतन्यप्रभा** ●

वो नयन हो गए ओझल, इन नयनों से।
जो शत सहस्र नयनों के दिव्य उजारे थे।।

वो हाथ छूट गए उन हजारों हाथों से।
जिनमें शक्तिपात कर कर्तृत्व के रग निखारे थे।।

वो पदपंकज अदृश्य हो गए धरती से।
जो लाखों कदमों की गति के सबल सहारे थे।।

वो कर्णपटल कहाँ खो गए नहीं जानते।
जो हर बेताब दिल के तारणहारे थे।।

वो ममतामयी आँचल कहाँ अदृश्य हो गया।
जिसने चरणागत के जीवन काँटे बुहारे थे।।

वो हृदय-धड़कने कैसे थम गई बिना कहे।
जो भक्त दिलों के धड़कनों को प्यारे थे।।

वो मधुर वर्णमाला के आखर हुए कहाँ तिरोहित।
जिनकी झन्कार के स्पंदन पीड़ाहारे थे।।

वो चंदा की रोशनी गुम हो गई कहाँ।
जिससे रोशन अनगिन जन भाग्य सितारे थे।।

कहाँ है वो माँ जिनसे मिलकर हर दिल कहता।
वो शासनमाता महाश्रमणीजी हमारे थे।।

---

## इत उत ढूँढ़ रहा जन मानस

● **साध्वी मननयशा** ●

पलक झपकते ओझल हो गई मन मोहक मुरतियां।
इत उत ढूंढ़ रहा जन मानस नहीं आती नजरियां।।

शबरी की चाह थी दर्शन की राम स्वयं पधराये हैं।
विधिवत वंदन कर तुमको भी मंगल शरण सुनाये हैं।
गुरुवर चरणों में धरदिन्ही ज्यूं की त्यूं चदरियाँ---।।

इंगियागार दृष्टि आराधन, गुरुत्रय की वर सन्निधि में।
कार्य कुशलता ममता क्षमता समता जीवित परिधि में।
भावों की निर्मल गंगा से बहती रही लहरियां---।।

हर दिल की धड़कन को समझा पीड़ा हर लेती पल में।
गण गणपति हो निष्ठा गहरी संस्कार भरे नंदनवन में।
पावन कर कमलों से खिल गई कइयों की मरुवरियां---।।

अनुपमेय व्यक्तित्व तुम्हारा, क्या गौरव गरिमा गायें।
श्रमणी गण की सती शेखरे! पद-चिह्नों पर बढ़ जायें।
सूनी हो गई मन की गलियाँ, नयणां तरसे सुरतियां---।।

भैक्षव शासन कल्पतरु की छाँह तले आनंद पाया।
ऊपर जाऊँ तुलसी छाया, नीचे महाश्रमण साया।
शासनमाता प्रस्थित हो गई शिवपुर की नगरिया---।।

**लय : नगरी-नगरी द्वारे---**

## संताप हरो तुम मेरा

● **साध्वी प्रशमयशा** ●

वत्सलता की अमर छाँव में, पाया नया सवेरा।
चंदेरी की सिद्ध साधिके! अब कहाँ किया बसेरा।।

तुलसी गुरु का चयन बना, भैक्षव गण वरदानी,
चंद्रमणि-आभा मनहारी, गूंजी कीर्ति कहानी,
सत्यं शिवं सुंदरं से, क्षण-क्षण नवरंग उकेरा।।

साँसों की सरगम पर बजती, गुरु-भक्ति इकतारी,
अंतिम साँस धरी गुरु-चरणां, प्रभु सन्निधि सुखकारी,
गुरु हो तो ऐसे हो विजयी शिरोमणि वचन उचेरा।।

असाधारण व्यक्तित्व तुम्हारा, उपमा क्या सजाएँ,
अमल स्याही से लिखी है जीवन पोथी की ऋचाएँ,
ज्ञान-ज्योति की प्रभुता से मिट गया सघन अंधेरा।।

नारी जाति को हिमालय सी दी है ऊँचाई,
ममता की गंगोत्री में, हर कली मुस्काई,
कैसे भूलें उपकारों को, संताप हरो तुम मेरा।।

**लय : जनम-जनम का साथ---**

---

## अनगिन दीप जलाएँ

● **साध्वी मुदितयशा** ●

शासनमाता साध्वीप्रमुखा गौरवगाथा गाएँ।
मिली प्रेरणाएँ जो तुमसे जीवन-पंथ बनाएँ।।

ऋणी रहेगा संघ हमेशा सेवाएँ तेरी अनमोल,
हो जाते आश्वस्त हृदय सुन तेरे मधुरिम मंजुल बोल।
कार्यकला थी अद्‌भुत तेरी कैसे उसे भुलाएँ।।१।।

जागरूकता का सुंदरतम उदाहरण तेरा जीवन,
संस्कारों का सिंचन दे महकाएँ कितने मन-उपवन।
सहज-सुघड़ जीवनशैली जीने की कला सिखाएँ।।२।।

चिरसंचित पुण्यों का फल गुरुओं की कृपा सवाई,
सतत अमन्द अनुत्तर पौरुष, वर्धमान पुण्याई।
पुण्य और पौरुष की युति को आओ शीश झुकाएँ।।३।।

तीव्र वेदना में भी देखी समता सहिष्णुता हरदम,
तेरा जीवन भक्ति शक्ति आत्मानुरक्ति का शुभ संगम।
प्रेरक दीपशिखा बन तुमने अनगिन दीप जलाएँ।।४।।

अहोभाग्य गुरुवर की सन्निधि में अंतिम उच्छवास लिया,
गुरुवर के श्रीमुख से आराधना गीतों का श्रवण किया।
लाखों में विरला मानव ही ऐसा अवसर पाएँ।।५।।

**लय : जनम-जनम का साथ----**

# शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के प्रति आध्यात्मिक उद्गार

## क्षमता समता धृतिधारी

● **शासनश्री साध्वी यशोमती** ●

साध्वीप्रमुखा महाश्रमणी, ममता की मूरत प्यारी।
क्षमता समता धृतिधारी।
साध्वीप्रमुखा महाश्रमणी, ममता की मूरत प्यारी।
निर्मलता विस्मयकारी।।आं।।

सतरह से अठहत्तर तक, संयम चर्या परिपालन।
वर्ष पचास किया प्रमुखापद, का सम्यग् संचालन।
तीन तीन आचार्यों से पाई, अनुपम रिझवारी।।१।।

अनुपमेय था सब कुछ किन शब्दों से तुमको तोलूँ।
अंतरमन कहता कुछ बोलो, पर क्या कैसे बोलूँ?
अथ से इति तक पाई मैंने कृपा तुम्हारी भारी।।२।।

बचपन से लेकर बीदासर तक की सारी यादें।
पूर्वांचल दक्षिण की यात्रा, पूरी करी मुरादें।
अंतिम क्षण तक भूल नहीं, पाऊँगी महिमा न्यारी।।३।।

शासनमाता सदा संघ की, करती रहना सेवा।
महाश्रमण शासण में जी भर, खायें मीठा मेवा।
गौरवशाली भैक्षवगण से, जुड़ी रहे इकतारी।।४।।

**लय : प्यासे पंछी नील गगन में---**

---

## वत्सलता रस झरनो बहायो

● **साध्वी मधुस्मिता** ●

मातृहृदया प्रवर शासन माँ सुखकर स्नेह लुटायो।
वत्सलता रस झरनो बहायो।
गौरव गावण नै मनड़ों उमड़ायो।।

छोटी आयु में संयम धार्‌यो योग स्थिरता स्यूं खूब संवार्‌यो।
श्रम रो सुमन खिल्यो श्रुत रो दीप जल्यो तेज सवायो।
गुरु रै दिल में सुस्थान बणायो।।

थांरी अद्‌भुत क्षमता निहारी तुलसी प्रभुवर करी रिझवारी।
आ है केसर क्यारी सौरभ प्यारी-प्यारी पद संभलायो।
साध्वी समुदाय नै अमृत पिलायो।।

आगम जोड़ां रो कार्य विलक्षण लेखन संपादन देख चकित जन।
काव्य कुशलता न्यारी प्रवचन पटुता भारी चित्त लुभायो।
थांरो सिरजन अधिक सुहायो।।

जीवन भर थे रह्‌या गुरुकुलवासी दक्षिण यात्रा बणी इतिहासी।
अमृत मोच्छव सुखद शासनमाता विरुद गुरु बगसायो।
शासन उपवन में आनंद छायो।।

गुरुवर लंबी यात्रा कराई अंतिम क्षण तक प्रगटी पुण्याई।
आलोचन अनशन आराधक पदवरण, साझ दिरायो।
मुक्ति मार्ग प्रशस्त करायो, ओ उपकार न जाय भूलायो।।

रह-रह स्मृतियाँ 'मधुस्मिता' आवै ममता सागर में कुठा नहलावै।
निर्मल संयम जीवन जीणो है क्षण-क्षण पाठ पढ़ायो।
उन्नति पथ पर बढ़णो सिखायो।।

**लय : तुमसे लागी लगन---**

## शासनमाता पर है नाज

● **साध्वी शुभ्रयशा** ●

शासनमाता पर है नाज।
असाधारण प्रमुखाश्री का गौरव गाएँ आज।।

कोलकाता में जन्म तुम्हारा कला प्रवर अभिधान तुम्हारा।
चंदेरी का दिव्य सितारा बैद वंश का तुम उजियारा।
सूरज तात मात छोटी बाई के मन का तारा।।

वैराग्य भाव था बड़ा विलक्षण, बाबोसा ने किया परीक्षण।
चार वर्ष संस्था में शिक्षण बनी मुमुक्षु लिया प्रशिक्षण।
द्विशताब्दी का सुंदर अवसर, दीक्षा का ओगाज।।

संस्कृत भाषा थी उपकारी, प्राकृत भाषा भी आभारी।
सृजन विधाएँ विविध तुम्हारी, लेखन कितना शिव सुखकारी।
ज्ञानामृत का पान करें हम जाने जीवन का राज।।

निर्मल था आचार तुम्हारा, पावन गंगा जल की धास।
कुशल सफल नेतृत्व तुम्हारा, साध्वी गण का सबल सहास।
तेरी सन्निधि मंगलकारी, फलते वांछित काज।।

जिन हाथों ने हमें सजाया, जिन चरणों ने हमें बढ़ाया।
समय-समय पर बोध दिराया, अनुशासन का पाठ पठाया।
अमर रहेगा नाम तुम्हारा, अंतर की आवाज।।

यात्रा कर इतिहास रचाया, भारत भू पर भ्रमण कराया।
गाँव-गाँव घर-घर महाकाया, जन-जीवन सरसब्ज बनाया।
पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण, यश गूंजे निर्व्याब।।

गुरु कृपा के पल अनमोले, कौन तराजू से हम तोले।
अमृतम् के जब पन्ने खोले, भक्त हृदय का कण-कण बोले।
जड़ चेतन से सजा हुआ है, सात सूरों का ताज।।

गण गणपति हित सहज समर्पण गुरु चरणों में तन-मन अर्पण।
अप्रमाद का उज्ज्वल दर्पण, प्रशस्त साधना में रत क्षण-क्षण।
कृपा कराई सदा सवाई महाश्रमण गुरुराज।
महाप्रयाण हुआ दिल्ली में सन्निधि पा गुरुराज।।

## जीवन सरस बनाऊँ

● **साध्वी मधुयशा** ●

दिव्य अलौकिक जीवन से मैं नई प्रेरणा पाऊँ।
देख तुम्हारी समता क्षमता जीवन सरस बनाऊँ।।

जब-जब अवलोकन करती हूँ, ज्योतिर्मय तब जीवन।
वरदहस्त को पा, खिल उठता मेरा मन उपवन।
कैसी सुंदर जीवनशैली, व्यक्त नहीं कर पाऊँ।।

सहज समर्पण और सादगी, बना जीवन का सूत्र तुम्हारा।
ऋजुता-मृदुता और नम्रता, का सिखलाया नारा प्यारा।
तेरे गुण गौरव की गाथा, हर पल स्मृति में लाऊँ।।

गुरु दृष्टि की अनुगामी ही, रही अहुनिश दृष्टि तुम्हारी।
गुरु चरणों में कर दिया, सर्वस्व समर्पित इच्छा पूरी।
सागर सम उनकी गहराई, निज आदर्श बनाऊँ।।

कैसे माप सकूँ शब्दों में, माँ व्यक्तित्व तुम्हारा।
संघ संपदा के कण-कण में, है कर्तृत्व तुम्हारा।
अनुपमय वात्सल्य तुम्हारा, कैसे मैं बतलाऊँ।।

## णमो महाश्रमणीवरम्

● **समणी कमलप्रज्ञा, करुणाप्रज्ञा, सुमनप्रज्ञा** ●

महाशक्ति का मंगलप्रयाण णमो महाश्रमणीवरं,
महाभक्ति का ऊर्ध्वप्रस्थान णमो महाश्रमणीवरं।

कोटि कोटि हृदय में वास तेरा,
अद्‌भुत अष्टगंध सुवास तेरा,
पसरी महिमा त्रि जगती जहान।
णमो महाश्रमणीवरम्---।।

गुरु चरणोपासिका सेवी तुम्हीं,
अमृत गर्भा अमृतदात्री तुम्हीं,
गुरुत्रय सेवा से पाया बहुमान।
णमो महाश्रमणीवरम्---।।

गणपति गणनायक महा कीर्तिधरं,
दिव्य ज्योतिर्धरं, संघ सृष्टि करं,
शासनमाता सुस्थापित सन्मान।
णमो महाश्रमणीवरम्---।।

जुग-जुग जाप जपेगा जन-जन तेरा,
भिक्षु शासन, शासनमाता तेरा,
शत सह कण्ठे कण्ठे तेरा गुणगान।
णमो महाश्रमणीवरम्---।।

**लय : भक्ति करतां---**

---

## करुणा रस बरसाया

● **समणी मानसप्रज्ञा** ●

महाश्रमणी की कार्यकुशलता, सबके दिल को भाई।
तेजस्वी आभावलय से ऊर्जा हमने पाई।।

अप्रमत्त बन करके जीना, तुमको सदा सुहाया।
वैराग्य प्रधान जीवन साधक का, आगम में बतलाया।
उच्च शिखरों पर चढ़ने वाला, पाता है तरुणाई।।

लाखों भक्तों पर माता ने, करुणा रस बरसाया।
मुरझे हुए हृदय कमल को, तुमने ही महकाया।
समता अनुपम देख-देखकर, कलि-कलि विकसाई।।

शासनमाता सन्निधि तेरी हरपल आती याद।
अमृतरस उस ग्रास में, होता अद्‌भुत स्वाद।
प्रफुल्लित रहता मन यह मेरा, शक्ति मैंने पाई।।

✦ *शराब, धूम्रपान आदि जीवन में विकृति घोलने वाले हैं। नशीले पदार्थों के दुष्परिणामों से परिचित होकर भी राजस्व के लोभ में इन्हें प्रतिबंधित नहीं करना जनता के स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ करना है।*

**– आचार्यश्री महाश्रमण**

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
4 - 10 अप्रैल, 2022



✦ *यदि शराब के बारे में किसी को मालूम न होता तो संसार के अपराधों की आधी संख्या तथा गरीबी बहुत बड़ी मात्रा में दूर हो जाती।*

**—आचार्यश्री महाश्रमण**

# शांति और अहिंसा से अनेक समस्याओं का समाधान हो सकता है : आचार्यश्री महाश्रमण

**अणुव्रत भवन, २६ मार्च, २०२२**

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी आज प्रातः ओसवाल भवन से पुनः अणुव्रत भवन पधारे। मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए पूज्यप्रवर ने फरमाया कि आदमी के भीतर अनेक प्रकार की वृत्तियाँ होती हैं। मुख्यतः आवेश की भी वृत्ति, लोभ और भय की भी वृत्ति। आदमी डर जाता है। डरना भी हमारी एक संज्ञा है। वृत्ति है।

जैन वाङ्मय में आहार संज्ञा, भय संज्ञा, मैथुन संज्ञा और परिग्रह संज्ञा—यों संज्ञा के चार प्रकार आते हैं। दस प्रकार भी बताए गए हैं। मोहनीय कर्म का एक अंश है, यह भय। नौ कषाय में भय भी एक है। आदमी खुद भी डरता है और दूसरों को भी डराने की चेष्टा करता है। अभय के भाव में दो बातें सन्निहित हो जाती हैं—डरना भी नहीं और डराना भी नहीं।

डरना एक दुर्बलता है, तो डराना एक पाप है। दूसरों को गलत रूप में डराने की चेष्टा करेंगे तो खुद को भी डरना पड़ सकता है। हिंसा के बड़े परिवार में यह डराना भी एक अवयव सदस्य है। एक प्रसंग से समझाया कि राजा रक्षक होता है, पर कभी पशुओं के लिए भक्षक भी बन जाता है। राजा के तीन कर्तव्य हैं—कामगारों की रक्षा करना, दुर्जनों पर अनुशासन एवं आश्रित जो प्रज्ञा है उसका भरण-पोषण करना। ये राजधर्म की बाते हैं।

वर्तमान में लोकतंत्र प्रणाली है, पर है वो शासन की प्रणाली ही। दो प्रविधियाँ हैं, मर्म एक ही है। लोकतांत्रिक प्रणाली में भी अनुशासन, कर्तव्यनिष्ठा, नियम निष्ठा ये आवश्यक हैं। देश स्वतंत्र है, पर स्वतंत्रता का मतलब स्वच्छंद नहीं है। जनता को भी अभय मिले। आत्मानुशासन अच्छा चलता है तो अभय का भाव रह सकता है। व्यवस्था भी अच्छी रह सकती है।

परानुशासन भी आवश्यक होता है। निर्दोष की सुरक्षा और दोषी को उचित दंड। मनुष्यों की रक्षा होती है, पर पशु-पक्षियों की भी असुरक्षा न हो जाए। उनको भी जीने का अधिकार है। शिकार करने वाले को आनंद आ सकता है, पर जिसका शिकार किया गया है, उसकी क्या हालत होगी। दूसरों को डराने वाला खुद भी डर सकता है।

क्षमायाचना से अभयदान मिल सकता है। साधु तो अहिंसा का पुजारी होता है। साधु का धर्म है वह क्षमा मूर्ति बना रहे। हिंसा करने वाला साधुता से दूर चला जाता है। अभयदान चाहने वाला अभयदान देना सीखे। जीवन अनित्य है, फिर हिंसा में क्यों आसक्त बने। हम भी अभयदानदाता बनें। किसी प्राणी की अकारण हिंसा न करें। साधु तो सभी प्राणियों का पीहर है, उनसे किसी को खतरा नहीं होता है। साधु के तो छ काय के जीव को मारने का जीवन भर का त्याग है।

साधु तो हमारे समता और आनंद में रहें। गृहस्थ को तो आवश्यक हिंसा करनी पड़ती है। अनेक समस्याओं का समाधान शांति और अहिंसा से हो सकता है। आवश्यकता हिंसा से गृहस्थ बचे। युद्ध को मौका ही न मिले। शांति-समझौता वार्ता करें। प्रयास हो कि सब अहिंसा में रहें। सबको शांति से रहने दें। तुम्हें जीवन प्रिय है तो औरों को भी जीवन प्रिय है।

परिवारों में, समाजों में, राष्ट्रों एवं विश्व में शांति रहे। एक तो आयस शस्त्र और एक होते हैं—मार्दव शस्त्र। कई बार आयस शस्त्र काम नहीं करता, मार्दव शस्त्र काम कर सकता है। कहीं-कहीं हिंसा से भी समाधान मिलना हो सकता है। परंतु प्रयास यही हो कि हिंसा को काम न लेना पड़े। अहिंसा, शांति व प्रेम से स्थिति सुलझ जाए ऐसा प्रयास हो। अहिंसा, मृदुता, प्रेम, करुणा में शांति में रहने वाले हैं। अशांति से हिंसा को पनपने का मौका मिल सकता है।

अणुव्रत आंदोलन भी एक अहिंसा से जुड़ा हुआ आंदोलन है। गृहस्थ निरापराध की तो हिंसा न करें। सापराध की हिंसा न करना तो और ऊँची बात है। अणुव्रत भवन

से जितनी संभव हो बात बाहर पहुँचे कि शांति-अहिंसा का माहौल रहे। अणुव्रत से अहिंसा, संयम और नैतिकता का प्रसार चिंतन गोष्ठियों के द्वारा होता रहे। प्रवचन व साहित्य भी योगभूत बन सकते हैं। भीतर की चेतना में अहिंसा आए।

रूस और युक्रेन का प्रसंग है। उनमें भी हिंसा दूर हो। उनके भी शांति के लिए अहिंसा को काम में लेना चाहिए। मारने या अशांति से क्या होगा? हम मंगलकामना करते हैं कि अहिंसा व शांति का संदेश रूस और युक्रेन की जनता में भी आए। एक कोरोना ने पूरे विश्व को हिला दिया और अशांति न आए तो बढ़िया। अभयदान, अहिंसा, शांति ये हमारे जीवन में पुष्ट रहें, यह काम्य हैं। रूस और युक्रेन की जनता में शांति-अहिंसा रहे, इसके लिए ध्यान का प्रयोग करवाया।

पूज्यप्रवर ने मुमुक्षु तारा लुणिया को साध्वी दीक्षा छापर में ६ सितंबर को देने का भाव है, यह फरमाया। साध्वी कुंदनरेखाजी के सिंघाड़े ने पूज्यप्रवर की अभिवंदना में गीत की प्रस्तुति दी।

शांति कुमार जैन, महिला मंडल, बारह व्रत की प्रस्तुति, कन्या मंडल, सतीष जैन ने अपने भावों की प्रस्तुति श्रीचरणों में दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

# ज्ञानपूर्वक आचरण सम्यक् हो सकता है : आचार्यश्री महाश्रमण

**अणुव्रत भवन, २४ मार्च, २०२२**

श्रमण परंपरा के शिखर पुरुष आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अणुव्रत भवन में मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि शास्त्रकार ने एक पथदर्शन दिया है कि पहले ज्ञान फिर दया-आचरण। दो चीजें हैं—एक है ज्ञान और दूसरी है आचरण।

शास्त्रकार ने कहा है कि आचरण के बारे में ज्ञान होना चाहिए। ज्ञानपूर्वक आचरण सम्यक् हो सकता है। ज्ञान के बिना अहिंसा का आचरण भी नहीं हो सकता। किसी भी क्षेत्र में जो कुछ करना है, उसका पहले ज्ञान होना चाहिए। संभवतः किसी भी विषय को ले लें, पहले उसका ज्ञान होगा तभी उसकी क्रियान्विति हो सकेगी।

मोक्ष के संदर्भ में भी ज्ञान और क्रिया दोनों का महत्त्व है। केवल जान लेना प्रयाप्त नहीं, उसके लिए क्रिया भी करनी पड़ेगी। ज्ञान और क्रिया के योग से कोई निष्पत्ति आ सकती है। यह एक प्रसंग से समझाया। कोश ज्ञान भी अप्रयाप्त है, ज्ञान के बिना क्रिया करे तो वो भी अप्रयाप्त हो सकती है। विद्या संस्थानों में अच्छा ज्ञान दिया जाता है, पर साथ में अच्छे संस्कार भी आएँ तो विद्यार्थियों का जीवन, उनकी आत्मा अच्छी बन सकती है।

अहिंसा एक ऐसा विषय है, उसका ज्ञान भी हो और आचरण भी हो। तेरापंथ को व्यापक क्षेत्र प्रतिष्ठित करने में अणुव्रत का भी बड़ा योगदान है। गुरुदेव तुलसी ने अणुव्रत को आगे बढ़ाया। विभिन्न लोगों से उनका संपर्क हुआ। चाहे वो आम हो या खास। कितने लोगों के हृदय में अणुव्रत को स्थापित किया। अहिंसा अणुव्रत की आत्मा है। अणुव्रत न्यास व अणुव्रत संस्थान के द्वारा नैतिकता-संयम, अणुव्रत के विकास में योगदान दिया जाता रहे, यह काम्य है।

अध्यात्म साधना केंद्र भी अच्छा परिसर है। अनेक गतिविधियाँ वहाँ चल रही हैं और चल भी सकती हैं। तेरापंथ समाज का अच्छा केंद्र है। चिकित्सा और साधना का अच्छा स्थान है। अणुव्रत भवन दिल्ली का केंद्रीय स्थान है। यह दिल्ली का मध्यवर्ती स्थान है। तेरापंथ समाज से जुड़े और भी स्थान हैं। सभी उपयोगी हैं। इन स्थानों में आध्यात्मिक, धार्मिक गतिविधियाँ रहें। कार्यकर्ता भी अपना कितना समय लगाते होंगे। चारित्रात्माओं का भी अच्छा पथ-दर्शन मिलता रहता है। जन संपर्क की दृष्टि से अणुव्रत भवन उपयोगी है।

दिल्ली का सौभाग्य है कि आचार्यों की कृपा दिल्ली पर रही है। दिल्ली में आने से पूरे भारत का संपर्क आसानी से हो जाता है। कुल मिलाकर दिल्ली एक अच्छा कार्य करने का स्थान भी है, और श्रावकों की अनुकूलता भी दिल्ली में है।

जैविभा द्वारा प्रो० मुनि महेंद्र कुमार जी की कृति—करें कतिपय निमज्जन-जैन तत्त्व सागर में पूज्यप्रवर के श्रीचरणों में लोकार्पित की गई। पूज्यप्रवर ने फरमाया कि यह किताब वैसे तत्त्वज्ञान की दृष्टि से संभवतः कुछ शोधपूर्णता से युक्त किताब है। मुनि महेंद्र कुमार जी स्वामी का ज्ञान भी उच्च स्तरीय प्रतीत हो रहा है। हो सकता है कि कोई-कोई बात इसमें ऐसी भी हो, जो अभी तक संघीय मान्यता को उसने न प्राप्त किया हो। मुनिश्री ने चिंतन के लिए अपना विचार संघ के सामने प्रस्तुत किया हो। मुनिश्री बहुश्रुत परिषद के संयोजक भी हैं।

बहुत ज्ञान वाला व्यक्ति बहुश्रुत होता है। यह पुस्तक हमारे साधु-साध्वियों के लिए व श्रावक-श्राविकाओं, समणियों जिनको तत्त्वज्ञान में रुचि हो, उनसे ज्ञान भी प्राप्त हो सकेगा। कुछ चिंतन का विषय भी प्राप्त हो सकेगा। ऐसी संभावना की जा सकती है। जैविभा तो ज्ञान के प्रसार में अपना योगदान देती है। समय-समय पर ग्रंथ सामने आते रहते हैं। वर्तमान में तो तेरापंथ में सारे ग्रंथों को प्रसारित करने का दायित्व जैविभा निभाती है।

जैविभा के अध्यक्ष मनोज लुणिया ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। यहाँ अणुव्रत भवन में जैविभा का स्टॉल निरंतर चालू रहेगा, आभार जताया।

साध्वीवर्याजी ने कहा कि संसारी आत्मा पुरुषार्थ से ही आत्मा से परमात्मा बन सकती है। सद्गुरु हमें मार्गदर्शन प्रदान करते हैं, हम उनके मार्गदर्शन के अनुसार ही आगे बढ़ें। जो व्यक्ति अपने कर्मों का शोधन करना चाहता है, उसे स्वाध्याय करना चाहिए। स्वाध्याय के प्रकारों के बारे में समझाया।

पूज्यप्रवर के स्वागत में अणुव्रत भवन के०सी० जैन, सुभाष जैन, एवं पुलकित खटेड़ ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

# कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग का दीक्षांत समारोह का आयोजन

**बैंगलुरु।**

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप, बैंगलोर द्वारा आयोजित कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग का दीक्षांत समारोह तेरापंथ भवन, गांधीनगर में अभातेयुप राष्ट्रीय महामंत्री पवन मांडोत की अध्यक्षता में संपन्न हुआ।

कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र द्वारा हुआ। प्रज्ञा संगीत सुधा टीम द्वारा विजय गीत की प्रस्तुति दी गई। राष्ट्रीय महामंत्री पवन मांडोत ने कार्यक्रम की विधिवत शुरुआत की व श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया। उन्होंने कहा कि पूरे भारत में इस कार्यकाल में ६० से ज्यादा सीपीएस कार्यशालाएँ आयोजित हुई हैं। तेयुप अध्यक्ष विनय बैद ने स्वागत वक्तव्य देते हुए कहा कि परिषद द्वारा प्रथम बार कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग कार्यशाला का आयोजन हुआ। अभातेयुप परिवार व प्रशिक्षकों के प्रति आभार व्यक्त किया। सात दिवसीय कार्यशाला में प्रथम दो दिवस का प्रशिक्षण मनीषा सेठिया, दो दिवसीय चिराग पामेचा व अगले दो दिवसीय हितेश गिरिया द्वारा अनमोल व दुर्लभ प्रशिक्षण दिया गया। सीपीएस कार्यशाला के सभी सहभागियों ने अपने सात दिवस का अनुभव व भावनाएँ व्यक्त की।

शासनश्री साध्वी कंचनप्रभाजी का कार्यक्रम में सान्निध्य प्राप्त हुआ। शासनश्री साध्वी मंजुरेखाजी ने कहा कि तेयुप बैंगलुरु कार्यकर्ताओं की खान है व इस सीपीएस कार्यशाला से अच्छे नए वक्ता भी उभरेंगे। शासनश्री साध्वी कंचनप्रभाजी ने कहा कि उपासकों द्वारा धर्मसंघ में अच्छी प्रभावना हो रही है। ज्ञान सभी में होता है और सीपीएफ के माध्यम से मंच पर भाव व्यक्त करने का प्रशिक्षण देता है।

सीपीएस राष्ट्रीय प्रभारी सतीश पोरवाड़, विशिष्ट अतिथि पूर्व अध्यक्षा, तेमम, गांधीनगर के शांति सकलेचा, सीपीएस प्रशिक्षक हितेश गिरिया, सीपीएस मुख्य प्रशिक्षक अरविंद मांडोत, कार्यक्रम के मुख्य अतिथि आचार्य तुलसी महाप्रज्ञ चेतना केंद्र के मंत्री पवन चोपड़ा ने अपने भाव व्यक्त किए। पधारे हुए गणमान्य का व टॉप पाँच सहभागियों का सम्मान किया गया।

कार्यशाला के संयोजक भरत रायसोनी व सह-संयोजक मुदित जैन का सराहनीय सहयोग रहा। अभातेयुप के राष्ट्रीय नेत्रदान प्रभारी नवनीत मूथा, तेरापंथ टाइम्स के संपादक दिनेश मरोठी, सामायिक राष्ट्रीय सहप्रभारी राकेश दक, क्षेत्रीय प्रभारी गौतम खाब्या, महिला मंडल अध्यक्षा स्वर्णमाला पोकरना, ट्रस्ट उपाध्यक्ष माणकचंद मूथा, अणुव्रत समिति मंत्री माणकचंद संचेती, तेयुप हेसबीएसटी अध्यक्ष धर्मेंद्र कोठारी सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं अन्य सदस्यों की उपस्थिति रही। आभार ज्ञापन संयोजक भरत रायसोनी ने किया।

# आत्मवाद जैन दर्शन का एक महत्त्वपूर्ण सिद्धांत है : आचार्यश्री महाश्रमण

**अध्यात्म साधना केंद्र,**
**२१ मार्च, २०२२**

साधना के श्लाका पुरुष आचार्यश्री महाश्रमण जी ने शासनमाता के पंचदिवसीय स्मृति सभा के अंतिम दिन फरमाया कि कर्मवाद अध्यात्म के वादों में एक वाद है, सिद्धांत है। अध्यात्म की दुनिया का एक स्तंभ है। हम जैन दर्शन को देखें, जैन दर्शन में अनेकवाद है। आत्मवाद जैन दर्शन का एक महत्त्वपूर्ण सिद्धांत है। आत्मा है, वह शरीर से पृथक् वाली चीज है। आत्मा शाश्वत है। उसे नष्ट किया नहीं जा सकता।

संसारी आत्मा का पुनर्जन्म भी होता है। और भी धर्मों में आत्मा की बात मिल सकती है। आत्मवाद के बाद दूसरा सिद्धांत है—कर्मवाद। आत्मा कर्म करती है, उसका फल भोगती है। सुख-दुःख की कर्ता स्वयं आत्मा है। कर्मवाद आत्मवाद से जुड़ा हुआ सिद्धांत है। आत्मवाद न हो तो कर्मवाद कहाँ टिकेगा।

जैन आगमों-ग्रंथों में कर्म का वर्णन मिलता है। जैन दर्शन का लोकवाद का भी सिद्धांत है। छः द्रव्यों वाला लोक है। लोक से संपृष्ट अलोक भी है। अलोक तो अनंत है। सागर में एक बूँद के समान अलोक में लोक है। लोकवाद में अद्योलोक, मध्य लोक, ऊर्ध्वलोक आदि अनेक बातें आती हैं। क्रियावाद भी एक सिद्धांत है। उसके भी अनेक वर्णन मिलते हैं।

इन वादों में एक है—कर्मवाद। 'जैसी करणी वैसी भरणी, सुख-दुःख स्वयं मिलेगा।'। जैसा कर्म जीव बद्ध करता है, वैसा उसका फल भी उसे मिलता है। कर्मवाद इतना निष्पक्ष है कि मैं कर्मवाद को न्यायधीश के रूप में देख रहा हूँ। बड़े से बड़ा प्राणी हो या छोटे-से-छोटा प्राणी सबको किए कर्म का फल मिलेगा। वहाँ सब निष्पक्ष है। फल मिलने में देर हो सकती है, पर अंधेर नहीं है।

जैन दर्शन में आठ कर्म बताए गए हैं—हम आदमी के व्यक्तित्व को आठ कर्मों के आलोक में विख्यात कर सकते हैं।

शासनमाता कनकप्रभाजी का १७ मार्च को होली के दिन इस परिसर में महाप्रयाण हो गया। नवमें दशक में वो चल रही थी। आठ महासती के कार्यकाल में सर्वाधिक कार्यकाल शासनमाता का रहा। जैसे आचार्यों से सर्वाधिक आचार्य काल गुरुदेव तुलसी का रहा था। जैसे आचार्य तुलसी जीवन के २२वें वर्ष में आचार्य बन गए थे तो जीवन के ३१वें वर्ष में साध्वी कनकप्रभाजी साध्वीप्रमुखा बन गई थी। वे नियमित गुरुदेव तुलसी की उपासना करती थी। गुरुदेव की महर नजर साध्वीप्रमुखाजी पर रहा करती थी।

साध्वीप्रमुखाश्री जी के मतिज्ञानावरणीय, श्रुतज्ञानावरणीय कर्म का अच्छा क्षयोपशम था। वे चिंतनशील और

प्रतिभावान भी थी। दो चीजें हैं—क्षयोपशम और पुण्य। पुण्य का संबंध तो भौतिकता से है। क्षयोपशम का संबंध आंतरिक शुद्धि से है। पुण्य से तो कर्म बँधते हैं, क्षयोपशम से कुछ कर्म हलके होते हैं। मोहनीय कर्म का तो क्षयोपशम है, तभी आदमी साधु बनता है। मोहनीय कर्म के क्षयोपशम से वो आगे बढ़ रही थी।

अंतराय कर्म शक्ति से संबंधित है। शासनमाता की शारीरिक क्षमता अच्छी थी। कितनी यात्राएँ कर ली थीं। कितना लेखन आदि का श्रम करती थी। प्रायः वे निरोग रही थी। कुछ प्रतिकूलताएँ भी स्वास्थ्य संबंधी आई थीं। उनके असातवेदनीय प्रायः दूर रहा, सातवेदनीय अनुकूल रहा। नाम कर्म-गौत्र कर्म तो तेरापंथ की साध्वीप्रमुखा बनना और ५० वर्ष तक बने रहना, यह पुण्याई के बिना तो संभव नहीं हो सकता। और भी आगे विकास किए। कितने पद-अलंकरण मिले। ये पुण्यवत्ता के बिना मिलने मुश्किल लग रहे थे। नाम कर्म-गौत्र कर्म का शुभ रूप से उदय था, योग था। आयुष्य कर्म भी प्रबल था। नौवें दशक में आ गई थी।

मनुष्य गति का आयुष्य और धर्म के माहौल में उनका जन्म हुआ। लाडनूं जैसे शहर में रहने का मौका मिला। कर्मवाद के संदर्भ में हम साध्वीप्रमुखाजी को व्याख्यात कर सकते हैं कि उनके कर्मों की स्थिति कैसी थी। साध्वी समुदाय पर तो उनका प्रभाव था, पर संत समुदाय पर भी उनका प्रभाव था। बड़े-बड़े संत भी उनका मान-सम्मान रखते थे। श्रावक-श्राविकाओं की भी उनके प्रति अच्छी भावना थी। सम्मान-श्रद्धा की भावना रहती थी।

तेरापंथ समाज में ही नहीं, अन्य लोगों में भी उनके प्रति सम्मान का भाव था। वे अन्य संप्रदाय के साधु-साध्वियों से मिलती रहती थी। कर्मवाद के सिद्धांत से अनुमान लगाया जा सकता है कि उन्होंने पिछले जन्मों में तपस्या-साधना की है, उसका फल यहाँ पुण्यवत्ता और साधना के रूप में आया है। आत्मा के पिछले कई जन्मों का संबंध रह सकता है। पुण्य का फल यहाँ मिल सकता है।

हमारे धर्मसंघ की एक विशिष्ट विभूति चली गई है। संसार में आई थी, हमारे धर्मसंघ में आई थी, साधना, सेवा की, ज्ञान और प्रशासनिक प्रबंधन कार्यों में अपना योगदान दिया। आचार्यों को सहयोग दिया, सेवा की। अपनी वत्सलता-विनम्रता से मानों दूसरों को प्रभावित किया। ऐसे साध्वीप्रमुखाजी को हमने खो दिया। अंतिम दिनों में उनका आत्मबल, मनोबल मजबूत था। वे शांत चित्त से पोढ़ाई रहती। चेहरे पर प्रसन्नता भी रहती। १६ मार्च तक तो वो बात करती थी, समझती थी, अच्छा क्रम था। पहचान भी रही थी। आचार्यप्रवर ने साध्वीप्रमुखाश्री की आत्मा के प्रति आध्यात्मिक विकास की मंगलकामना की।

**शुभाशंषा**

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि वही वास्तव में शास्त्रज्ञ होता है, जिसका मन सदैव शांत रहता है। शासनमाता का व्यक्तित्व शांति से ओतप्रोत था। वे स्वयं हर समय शांति का अनुभव करती थी। जो उनके परिसर या आभावलय के आसपास रहते उन्हें भी वे प्रसन्नता से सराबोर कर देती। वे दूसरों को शांत रहने की प्रेरणा भी देते रहते थे।

# फिट युवा - हिट युवा

**साउथ कोलकाता।**

फिट युवा-हिट युवा आयाम के अंतर्गत तेयुप, साउथ कोलकाता ने Brisk Walk विक्टोरिया मेमोरियल ग्राउंड्स में परिषद के अध्यक्ष अमित पुगलिया के नेतृत्व में कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में विशेष उपस्थिति अभातेयुप सदस्य जय चोरड़िया, टीपीएफ, साउथ कोलकाता के अध्यक्ष आलोक चोपड़ा एवं परिषद के वरिष्ठ अतिथि अजय कोचर, अनिल जैन, आशीष दुगड़ एवं प्रदीप खटेड़ की रही। कार्यक्रम के संयोजक विक्रम सिरोहिया थे। कार्यकारिणी सदस्यों की अच्छी सहभागिता रही।

# सीपीएस दीक्षांत समारोह का आयोजन

**चलथान।**

अभातेयुप द्वारा निर्देशित एवं तेयुप चलथान द्वारा आयोजित सीपीएस कार्यशाला के अंतिम दिन अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा की अध्यक्षता में तेरापंथ भवन में सीपीएस ग्रेजुएशन सेरेमनी का आयोजन किया गया। स्टेज प्रोटोकॉल विकेश दक द्वारा किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत तेयुप द्वारा विजय गीत के संगान के साथ हुई।

राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया। कार्यक्रम का संचालन अभातेयुप राष्ट्रीय महामंत्री पवन मांडोत द्वारा किया गया। सीपीएस कार्यशाला चलथान में ट्रेनर के रूप में सेवाएँ देने वाले अभातेयुप सीपीएस नेशनल ट्रेनर रक्षा मांडोत एवं अभातेयुप सीपीएस जोनल ट्रेनर गणेश बंब ने सीपीएस कार्यशाला से जुड़े ३० संभागियों की प्रस्तुति पर उनमें से ५ विशिष्ट संभागियों के नाम का चयन किया। जिनको तेयुप चलथान द्वारा पुरस्कृत किया गया।

अभातेयुप सीपीएस राष्ट्रीय सहप्रभारी कुलदीप कोठारी ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम में तेयुप चलथान शाखा प्रभारी सुनील चंडालिया, अभातेयुप सदस्य सौरभ पटावरी, प्रकाश छाजेड़, मनीष मालू, अर्पित नाहर, विकास मुनोत, प्रवीण बेताला, जेटीएन साथ पवन फुलफगर, तेरापंथ सभा अध्यक्ष सोहनलाल बाबेल, वरिष्ठ श्रावक तेजमल नौलखा, सभा मंत्री सुरेश पितलिया सहित अनेक पदाधिकारीगण, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा मीना नौलखा एवं टीम, नवसारी से गणमान्यजन, तेयुप, चलथान परामर्शक तथा साथीगण उपस्थित रहे। आभार ज्ञापन तेयुप मंत्री दीपक खाब्या ने किया।

अखिल भारतीय
# तेरापंथ टाइम्स
4 - 10 अप्रैल, 2022



✦ अणुव्रत के छोटे-छोटे नियम व्यक्ति को गलत कार्यों से बचने की प्रेरणा देते हैं।

—आचार्यश्री महाश्रमण

## गुरुभक्ति का मनभावन दृश्य

महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी की ३ देश और २० राज्यों की अहिंसा यात्रा पूर्णता के उपलक्ष्य में मुख्य मुनि महावीर कुमार जी ने गुरुदेव के पावन चरणों का प्रक्षालन कर संपूर्ण मानव जाति को अमृतपान के समान अहसास करवाया। शिष्य की गुरु के प्रति भक्ति और श्रद्धा से सराबोर इस मनोरम दृश्य को देखकर हर कोई अपने आपको धन्य महसूस कर रहा था।

## आचार्यश्री के प्रयासों से समाज में आध्यात्मिक चेतना आई है - ओम बिड़ला

लोकसभाध्यक्ष ओम बिड़ला ने कहा कि आचार्यश्री महाश्रमण जी की अहिंसा यात्रा संपन्नता समारोह में मुझे शामिल होने का मौका मिला, इसके लिए मैं धन्यता का अनुभव करता हूँ। आचार्यश्री ने ऐतिहासिक अहिंसा यात्रा की है। आपने विदेशों में भी भारतीय संस्कृति और अहिंसा का संदेश दिया है। आपके व्यक्तिगत संपर्क से लोगों में बदलाव आया है। अहिंसा का संदेश भारत के मूल में है। आपके प्रयास से व्यापक आध्यात्मिक चेतना समाज में आई है। आपने उग्रवाद ओर हिंसक क्षेत्रों की भी यात्रा की है। जैनधर्म में त्याग-तपस्या का महत्त्व है। हम समाज को कुछ दे सकें यह जैन धर्म की अवधारणा है। आपने लंबी यात्रा कर भारत का सम्मान बढ़ाया है, आपको बहुत-बहुत साधुवाद देता हूँ। आपकी यात्रा हमें रचनात्मक कार्य करने का संदेश देती है। हम नए भारत के निर्माण में आगे बढ़ेंगे।

## बहादुर वही है जो अहिंसक है - राजनाथ सिंह

भारत सरकार के रक्षामंत्री राजनाथसिंह ने बताया कि जैन धर्म विश्व का एक ऐसा धर्म-दर्शन है, जो अहिंसा में ही विश्वास करता है। ध्येय और लक्ष्य दोनों अहिंसामय हो सिर्फ जैन धर्म में ही हैं। हिंसा शारीरिक और मानसिक दोनों प्रकार की होती है। बहादुर वही है, जो अहिंसक है। जो इंद्रियों और स्वयं पर विजय प्राप्त करता है, वो महावीर है। जैन धर्म के मूल सिद्धांतों के बारे में बताया कि पूरी प्रवृत्ति निर्माण के मूल में पुद्गल है। यह वैज्ञानिक शोध में भी सिद्ध हो गई है। यह पुद्गल छोटे-बड़े, तेरे-मेरे सभी में है।

भारत का संगठित रूप जैन धर्म के कारण आया है। चंद्रगुप्त मौर्य के बारे में बताया। तीर्थंकर जब चरण आगे बढ़ाते हैं, तो कमल खिलते रहते हैं। ये कमल ऐसे ही खिलते रहें। मैं आचार्यश्री एवं आप सभी का अभिनंदन करता हूँ।

## जैन दर्शन और तेरापंथ लाइफ लोंग रहेगा - अर्जुन मेघवाल

संसदीय मंत्री अर्जुनलाल मेघवाल ने कहा कि ६ नवंबर, २०१४ को एक नारा लगा था कि अहिंसा यात्रा सफल हो। आज नारा लग रहा है, कितनी शानदार तरीके से अहिंसा यात्रा सफल हुई है। विराटनगर का प्रसंग बताया। समय-समय पर आचार्यश्री के दर्शन करने का अवसर मिलता है। आपने बहुत बड़ा काम किया है। हम आपका तहेदिल से स्वागत करते हैं। अनेक कष्टों को सहन करते हुए सफल यात्रा करके आप पधारे हैं। जैन दर्शन लाइफ लोंग रहेगा तो तेरापंथ लाइफ लोंग रहेगा। जैन दर्शन हमें स्यादवाद और अनेकांतवाद का संदेश देता है। अणुव्रत गीत के एक पद्य का उच्चारण किया। यही उद्देश्य इस यात्रा का रहा है। लोगों का हृदय परिवर्तन हुआ है, यह आप जैसा राष्ट्र ऋषि ही कर सकता है।

## आने वाली पीढ़ियों के लिए उदाहरण रहेगी अहिंसा यात्रा - परमानंद झा

नेपाल के पूर्व उपराष्ट्रपति परमानंद झा ने कहा कि जैन, वैदिक और बौद्ध धर्म ने विश्व की संस्कृति को समृद्ध बनाया है। नेपाल अपने पड़ौसी भारत से सांस्कृतिक व दार्शनिक विचारों से लाभान्वित होता रहता है। नेपाल में जैनाचार्यों का आगमन अतीत और वर्तमान में भी होता रहा है। आचार्य महाश्रमण जी ने अपनी धवल सेना के साथ अहिंसा यात्रा शुरू की थी। आपने कठिन परिस्थितियों में भी नेपाल की जनता को आशीर्वाद प्रदान किया है। यह यात्रा आने वाली पीढ़ियों के लिए उदाहरण बनकर रहेगी। इस यात्रा से भारत-नेपाल संबंध मजबूत हुए हैं। मैं आपके त्याग और समर्पण भाव का आदर करता हूँ। आप भविष्य में भी लोक-कल्याण का कार्य करते रहें।

नेपाल के प्रधानमंत्री शेर बहादुर देऊबा के संदेश का वाचन नेपाल के राजदूत रामप्रसाद सुवेदी ने किया और अपनी भावना भी अभिव्यक्त की।

## संत समाज मन को कल्याण देने वाला तीर्थ होता है - सुधांशु त्रिवेदी

लोकसभा सांसद सुधांशु त्रिवेदी ने अपनी भावना व्यक्त करते हुए कहा कि संत समाज मन को कल्याण देने वाला तीर्थ होता है। जैन धर्म में इसीलिए तीर्थंकर की अवधारणा है। तीर्थंकर सर्वज्ञ होता है। जो शुद्ध शाकाहारी होता है, वह जैन होता है, ऐसी विदेशों में धारणा है। मांसाहार से चेतना नीचे गिरने लग जाती है। जैन धर्म के सिद्धांतों से चेतना ऊर्ध्व को प्राप्त करती है। जैन धर्म में ज्ञान का स्तर उच्च है। नमस्कार महामंत्र का महत्त्व समझाया।

## अहिंसा यात्रा समापन की चित्रमय झलकियाँ

परम श्रद्धेय, परम-आराध्य भगवान महावीर, परम श्रद्धेय आचार्य भिक्षु, परम पूजनीय गुरुदेव आचार्य तुलसी और परम पूजनीय आचार्य महाप्रज्ञजी का श्रद्धा के साथ स्मरण कर इस अहिंसा यात्रा की संपन्नता की मैं घोषणा करता हूँ।

**अहिंसा यात्रा सफल है....सफल है....**

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**